वाट्सऐप @ 94140-78380, 92140-78380 | वर्ष:6 अंक: 141 | शुक्रवार 6 नवम्बर 2026 | दैनिक ई-पेपर

शाबाश इंडिया

@ShabaasIndia | प्लॉट नंबर 8, ओझा जी का बाग, गांधी नगर मोड, टोंक रोड, जयपुर

मुख्य सचिव की अध्यक्षता में जन आधार प्राधिकरण की उच्च स्तरीय समिति की बैठक आयोजित

जन आधार से योजनाओं का लाभ प्रत्येक पात्र व्यक्ति तक पहुंचाना सुनिश्चित करें: श्रीनिवास

ई-मित्र संचालकों से फेसबुक लाइव के माध्यम से होगा सीधा संवाद, जन आधार एआई चैट बॉट का किया परीक्षण



जयपुर. शाबाश इंडिया

मुख्य सचिव वी. श्रीनिवास ने कहा कि राज्य सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ प्रत्येक पात्र व्यक्ति तक पारदर्शी, सुगम एवं समयबद्ध तरीके से पहुंचाने में जन आधार की महत्वपूर्ण भूमिका है। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि जन आधार व्यवस्था को और अधिक सुदृढ़ बनाते हुए इसके तकनीकी पक्षों में निरंतर सुधार किये जाए तथा आमजन को योजनाओं का लाभ प्राप्त करने में किसी प्रकार की परेशानी नहीं हो।

श्रीनिवास की अध्यक्षता में गुरुवार को शासन सचिवालय में राजस्थान जन आधार प्राधिकरण की 5वीं उच्च स्तरीय समिति की बैठक आयोजित हुई। बैठक में जन आधार के माध्यम से संचालित विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं की प्रगति, तकनीकी पहलुओं, सेवा वितरण की गुणवत्ता तथा आमजन को उपलब्ध कराई जा रही सुविधाओं की विस्तृत समीक्षा की गई। मुख्य सचिव ने निर्देश दिए कि प्रदेश में संचालित 85 हजार से अधिक ई-मित्र केंद्रों के संचालकों के साथ विभाग द्वारा फेसबुक लाइव के माध्यम से विशेष संवाद आयोजित किया जाए। इस संवाद के माध्यम से जमीनी स्तर पर योजनाओं के क्रियान्वयन की वास्तविक स्थिति की जानकारी ली जाएगी। साथ ही ई-मित्र केंद्रों के माध्यम से आमजन को सरकारी योजनाओं का लाभ दिलाने में आ रही व्यावहारिक कठिनाइयों एवं सुधार की संभावनाओं पर भी चर्चा की जाएगी।

जन आधार एआई चैट बॉट का किया परीक्षण

बैठक के दौरान मुख्य सचिव ने जन आधार एआई चैट बॉट का परीक्षण कर इसकी कार्यप्रणाली एवं उपयोगिता का जायजा लिया। उन्होंने आधार एवं जन आधार से संबंधित तकनीकी व्यवस्थाओं के रिस्पांस टाइम और एक्यूरेसी की समीक्षा करते हुए सेवाओं को अधिक प्रभावी एवं उपयोगकर्ता के अनुकूल बनाने पर जोर दिया।

सरल डैशबोर्ड से होगी नियमित मॉनिटरिंग

मुख्य सचिव ने विभाग को जन आधार योजना की मासिक प्रगति रिपोर्ट नियमित रूप से प्रस्तुत करने के निर्देश दिए। उन्होंने जन आधार डैशबोर्ड को सरल एवं अधिक प्रभावी रूप से विकसित करने को कहा, जिसमें सूचनाएं व्यवस्थित रूप से उपलब्ध हों तथा डेटा का अनावश्यक क्लस्टरिंग नहीं हो। इससे योजनाओं की प्रगति, लाभार्थियों की स्थिति एवं विभागीय कार्यों की मॉनिटरिंग अधिक सहज और प्रभावी हो सकेगी। मुख्य सचिव ने जन आधार से संबंधित शिकायतों एवं परिवादों के त्वरित निस्तारण को सर्वोच्च प्राथमिकता देने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि 181 कॉल सेंटर पर प्राप्त परिवादों की नियमित मॉनिटरिंग की जाए। साथ ही विभागीय अधिकारी स्वयं 181 कॉल सेंटर पर जाकर जन आधार से संबंधित परिवादों की सुनवाई एवं उनके निस्तारण की प्रक्रिया का निरीक्षण करेंगे।

जन आधार 2.0 के सुगम क्रियान्वयन एवं तकनीकी समन्वय के दिए निर्देश

बैठक में जन आधार 2.0 के सफल क्रियान्वयन तथा इसके उन्नत संस्करण पर सुगम स्थानांतरण की प्रक्रिया की भी विस्तृत समीक्षा की गई। मुख्य सचिव वी. श्रीनिवास ने विभिन्न विभागों द्वारा लेगेसी सिस्टम से नए पोर्टल पर माइग्रेशन के दौरान आ रही तकनीकी एवं व्यावहारिक कठिनाइयों पर चर्चा करते हुए इनके समयबद्ध एवं प्रभावी समाधान के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि सभी संबंधित विभाग आपसी समन्वय एवं सहयोग से कार्य करें।

96 प्रतिशत से अधिक आबादी जन आधार से जुड़ी

बैठक में डॉ रवि कुमार सुरपुर, शासन सचिव आयोजना ने बताया कि प्रदेश में अब तक 2.08 करोड़ से अधिक परिवार एवं 8.09 करोड़ से अधिक सदस्य जन आधार से जुड़ चुके हैं। यह संख्या राज्य की अनुमानित आबादी का 96 प्रतिशत से अधिक है। जन आधार के माध्यम से विभिन्न सरकारी योजनाओं के अंतर्गत अब तक 242 करोड़ से अधिक के डीबीटी ट्रांजैक्शन एवं 1.63 लाख करोड़ रूपए से अधिक डीबीटी के माध्यम से लाभार्थियों के खातों में हस्तांतरित किये जा चुके है। जन आधार योजना से सम्बंधित 181 पर प्राप्त शिकायतों के निस्तारण का औसत समय 07 दिवस है एवं संतुष्टि का स्तर 91 प्रतिशत है, जो की प्रदेश में सर्वाधिक है। 181 की विभागीय प्रगति पर मुख्य सचिव द्वारा संतुष्टि व्यक्त की गयी। मुख्य सचिव ने कहा कि राज्य सरकार डेटा आधारित सुशासन डेटा-ड्रिवेन गवर्नेंस को सशक्त बनाने की दिशा में निरंतर कार्य कर रही है। जन आधार के तकनीकी सुदृढ़ीकरण, बेहतर निगरानी एवं शिकायतों के प्रभावी निस्तारण से योजनाओं के लाभ वितरण की व्यवस्था को और अधिक पारदर्शी, जवाबदेह एवं जनहितकारी बनाया जाएगा।

महावीर इंटरनेशनल अजयमेरु चलाएगा दीपावली पर "खतरनाक पटाखे नहीं" जन-जागरूकता अभियान



अजमेर.शाबाश इंडिया

ब्यूरो चीफ रोहित जैन। दीपावली पर खतरनाक एवं अत्यधिक प्रदूषण फैलाने वाले पटाखों के उपयोग को रोकने तथा आमजन को जागरूक करने के उद्देश्य से महावीर इंटरनेशनल अजयमेरु केंद्र की ओर से विशेष जन-जागरूकता अभियान चलाया जाएगा। इस संबंध में पंचशील स्थित केंद्र कार्यालय में आयोजित बैठक में जागरूकता पोस्टरों का विमोचन किया गया। महावीर इंटरनेशनल रीजन-3 के प्रचार-प्रसार उपनिदेशक कमल गंगवाल एवं केंद्र चेयरमैन गजेंद्र पंचोली ने बताया कि विमोचित पोस्टरों के माध्यम से आमजन को खतरनाक एवं प्रदूषण फैलाने वाले पटाखों से होने वाले नुकसान की जानकारी दी जाएगी। अभियान के तहत इन पोस्टरों को विभिन्न स्थानों पर वितरित कर अधिकाधिक लोगों तक सुरक्षित एवं पर्यावरण हितैषी दीपावली का संदेश पहुंचाया जाएगा। केंद्र के संरक्षक अशोक छाजेड़ ने नागरिकों से ग्रीन पटाखों के उपयोग को प्राथमिकता देने की अपील करते हुए कहा कि दीपावली की खुशियों के साथ पर्यावरण और स्वास्थ्य की सुरक्षा का ध्यान रखना भी जरूरी है। केंद्र सचिव लोकेश जैन सोजतिया ने कहा कि अभियान के संदेश को सामाजिक, शैक्षणिक एवं विभिन्न संस्थाओं तक पहुंचाने का प्रयास किया जाएगा। वहीं, केंद्र के वाइस चेयरमैन विजय जैन पाण्ड्या ने नागरिकों से खतरनाक एवं अत्यधिक प्रदूषण फैलाने वाले पटाखों से दूरी बनाकर स्वच्छ, सुरक्षित और स्वस्थ दीपावली मनाने की अपील की।

अयोध्या में पहली बार होगा 5 मंडलीय श्री कल्पद्रुम महामंडल विधान एवं विश्वशांति महायज्ञ, अवध प्रांत के 1008 श्रद्धालु होंगे शामिल



अयोध्या.शाबाश इंडिया

अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन युवा परिषद एवं मां ज्ञानमती यात्रा संघ, टिकैतनगर के संयुक्त तत्वावधान में जैन धर्म के शाश्वत तीर्थ अयोध्या में पहली बार 5 मंडलीय श्री कल्पद्रुम महामंडल विधान एवं विश्वशांति महायज्ञ का भव्य आयोजन किया जाएगा। 28 दिसंबर 2026 से 1 जनवरी 2027 तक आयोजित होने वाले इस पांच दिवसीय धार्मिक अनुष्ठान में अवध प्रांत के 1008 श्रद्धालु शामिल होंगे। अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन युवा परिषद के स्वर्ण जयंती वर्ष के उपलक्ष्य में आयोजित इस विधान में पांच तीर्थंकरों की जन्मभूमि अयोध्या में पांचों तीर्थंकरों के समवसरण बनाए जाएंगे। गणिनीप्रमुख आर्यिका शिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी की पावन प्रेरणा से होने वाले इस आयोजन को लेकर जैन समाज में उत्साह है। मां ज्ञानमती यात्रा संघ, टिकैतनगर के श्री निधेष जैन ने बताया कि भगवान ऋषभदेव की जन्मभूमि, बड़ी मूर्ति, अयोध्या में आयोजित इस विधान का उद्देश्य धार्मिक आस्था, विश्वशांति और समाज में आध्यात्मिक चेतना का प्रसार करना है। आयोजन में अयोध्या तीर्थ विकास एवं विश्व की सबसे बड़ी 108 फुट प्रतिमा निर्माण की प्रेरणास्रोत गणिनीप्रमुख आर्यिका शिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी का सान्निध्य एवं मंगल आशीर्वाद प्राप्त होगा। प्रज्ञाश्रमणी आर्यिकारत्न श्री चंदनामती माताजी का मार्गदर्शन तथा कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी का निर्देशन रहेगा। आयोजकों ने बताया कि मां ज्ञानमती यात्रा संघ की ओर से प्रतिवर्ष विभिन्न तीर्थक्षेत्रों की धार्मिक यात्राओं एवं अनुष्ठानों का आयोजन किया जाता है। इसी क्रम में इस वर्ष अवधवासियों के लिए शाश्वत तीर्थ अयोध्या में यह विशेष आयोजन किया जा रहा है। इसमें श्रद्धालुओं को पांचों तीर्थंकरों के समवसरणों के सान्निध्य में विधान एवं विश्वशांति महायज्ञ में सहभागी बनने का अवसर मिलेगा। विधान में शामिल होने वाले प्रत्येक इंद्र-इंद्राणी के लिए 2100 रुपए सहयोग राशि निर्धारित की गई है। इसमें पांच दिवसीय आवास, भोजन, पूजन, वस्त्र, पूजन सामग्री तथा निर्धारित व्यवस्था के अनुसार आने-जाने की सुविधा शामिल रहेगी। विधान के मुख्य पात्रों का चयन निर्धारित राशि के आधार पर किया जाएगा। आयोजक समिति ने श्रद्धालुओं से 30 नवंबर 2026 तक अपना पंजीकरण करवाने की अपील की है, ताकि आवास एवं अन्य व्यवस्थाएं समय पर सुनिश्चित की जा सकें। आयोजन में अधिकाधिक संख्या में शामिल होकर धर्मलाभ लेने का आह्वान किया गया है। आयोजकः अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन युवा परिषद एवं मां ज्ञानमती यात्रा संघ, टिकैतनगर। **संपर्क सूत्रः राजेश जैन 'राजू' 9451615108, निधेष जैन 9140311875, अमित जैन 'मोनू' 9450284446 एवं पारस जैन 'बबुआ' 9936535035।**

धन्वंतरि जयंती और धनतेरस : आरोग्य, आस्था और दिव्यता का प्रकाश

डॉ. संध्या यादवः वरिष्ठ प्रसूति एवं स्त्री रोग विशेषज्ञ

दीपोत्सव का पावन पर्व अपने साथ खुशियों, उमंग और सकारात्मकता का संदेश लेकर आता है। इस उत्सव का शुभारंभ धनतेरस से होता है। कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी को मनाया जाने वाला यह पर्व केवल सोने-चांदी और धातुओं की खरीदारी तक सीमित नहीं है, बल्कि जीवन में आरोग्य, संयम, समृद्धि और सुख-शांति के स्वागत का विशेष अवसर भी है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार, समुद्र मंथन के दौरान भगवान धन्वंतरि अमृत कलश लेकर प्रकट हुए थे। उन्हें आयुर्वेद का प्रवर्तक और देवताओं का वैद्य माना जाता है। इसी कारण धनतेरस का दिन धन्वंतरि जयंती के रूप में भी श्रद्धा और आस्था के साथ मनाया जाता है। भगवान धन्वंतरि का प्राकट्य हमें यह संदेश देता है कि जीवन में स्वास्थ्य से बढ़कर कोई संपत्ति नहीं है। भारतीय संस्कृति में भी कहा गया है कि पहला सुख निरोगी काया है। एक चिकित्सक के रूप में मेरा अनुभव है कि आधुनिक जीवनशैली और भागदौड़ ने हमारे स्वास्थ्य को अनेक चुनौतियों के सामने खड़ा कर दिया है। अनियमित दिनचर्या, असंतुलित खानपान, तनाव और शारीरिक गतिविधियों की कमी अनेक बीमारियों का कारण बन रही है। विशेष रूप से महिलाओं का स्वास्थ्य परिवार और समाज की खुशहाली से जुड़ा हुआ है। एक स्वस्थ महिला ही परिवार की देखभाल के साथ अगली पीढ़ी के स्वस्थ निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसलिए महिलाओं के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को प्राथमिकता देना आवश्यक है। धनतेरस का वास्तविक संदेश यही है कि भौतिक समृद्धि का आनंद तभी सार्थक है, जब हमारा शरीर और मन स्वस्थ हों। धन-संपत्ति, आभूषण और सुख-सुविधाएं जीवन को आकर्षक बना सकती हैं, लेकिन उनका आनंद लेने के लिए उत्तम स्वास्थ्य आवश्यक है। आयुर्वेद के सिद्धांतों, योग, संतुलित आहार और नियमित दिनचर्या को अपनाकर हम अपने जीवन को अधिक स्वस्थ और ऊर्जावान बना सकते हैं। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम स्वास्थ्य के प्रति जागरूक हों और छोटी-छोटी अच्छी आदतों को अपनी दिनचर्या का हिस्सा बनाएं। समय पर भोजन करना, पर्याप्त नींद लेना, नियमित व्यायाम करना और मानसिक तनाव से बचना स्वस्थ जीवन के महत्वपूर्ण आधार हैं। साथ ही समय-समय पर स्वास्थ्य जांच करवाना और किसी भी बीमारी के लक्षण दिखाई देने पर चिकित्सकीय परामर्श लेना भी जरूरी है। इस धनतेरस पर आइए, हम केवल सोने-चांदी या अन्य वस्तुओं की खरीदारी तक सीमित न रहें, बल्कि अपने और अपने परिवार के उत्तम स्वास्थ्य का संकल्प भी लें।





शिक्षा या केवल डिग्री?

खोती हुई राष्ट्रीयता और सर्वांगीण विकास





न्यायाधीश नगेन्द्र कुमार जैन

(पूर्व मुख्य न्यायाधिपति, मद्रास एवं कर्नाटक उच्च न्यायालय)

शिक्षा किसी समाज की आत्मा होती है। वह राष्ट्र की रीढ़ है, उसकी चेतना है और उसकी दिशा निर्धारित करने वाली शक्ति है। सच्ची शिक्षा वह है जो मनुष्य को केवल पढ़ा-लिखा नहीं, बल्कि जाग्रत, संवेदनशील, कर्तव्यनिष्ठ और राष्ट्रनिष्ठ नागरिक बनाए। हमारे समय की शिक्षा इसी उद्देश्य को लेकर चलती थी- व्यक्ति निर्माण के माध्यम से राष्ट्र निर्माण। आज जब हम पीछे मुड़कर देखते हैं, तो यह स्पष्ट होता है कि तब विद्यालय केवल इमारतें नहीं थे, वे संस्कार-स्थल थे, शिक्षक केवल विषय पढ़ाने वाले नहीं, बल्कि मार्गदर्शक और आदर्श थे, और शिक्षा केवल रोजगार का साधन नहीं, बल्कि जीवन जीने की कला थी।

विद्यालयी जीवन : अनुशासन और संस्कार की नींव

हमारे काल में विद्यालय की शुरूआत प्रार्थना सभा से होती थी। यह सभा केवल ईश्वर-स्मरण नहीं, बल्कि दिन भर की दिशा तय करने वाली प्रक्रिया थी। उसी समय उपस्थिति ली जाती थी, जिससे बच्चों में समय का मूल्य और अनुशासन का संस्कार बचपन से ही विकसित होता था। प्राचार्य द्वारा दिए गए संक्षिप्त लेकिन सारगर्भित उपदेश जीवन भर स्मरण रहते थे। सत्य, अहिंसा, परिश्रम, ईमानदारी, संयम और राष्ट्रप्रेम जैसे मूल्य केवल शब्द नहीं थे, बल्कि जीवन-व्यवहार का हिस्सा बनते थे। विद्यालय से छुट्टी के समय राष्ट्रगान गाया जाना अनिवार्य था। यह क्रिया बच्चों के मन में यह भाव भरती थी कि वे केवल अपने परिवार या स्वयं के लिए नहीं, बल्कि एक महान राष्ट्र के उत्तरदायी नागरिक हैं।

शारीरिक शिक्षा और खेल : स्वस्थ शरीर में स्वस्थ राष्ट्र

शिक्षा का एक महत्वपूर्ण स्तंभ था-शारीरिक विकास। खेलकूद, पीटी, ड्रिल, योग, सूर्य नमस्कार और दौड़ जैसे अभ्यास बच्चों को स्फूर्ति और स्वास्थ्य प्रदान करते थे। खो-खो, कबड्डी, मलखंभ, कुश्ती, एथलेटिक्स जैसे देशज खेल केवल मनोरंजन नहीं थे, बल्कि साहस, संतुलन, धैर्य और टीम भावना के शिक्षक थे। इन खेलों के माध्यम से बच्चे जीत के साथ विनम्रता और हार के साथ धैर्य सीखते थे। यही गुण आगे चलकर उन्हें जीवन के संघर्षों में टूटने नहीं देते थे।

श्रम और कौशल : स्वावलंबन की शिक्षा

हमारे समय में शिक्षा का अर्थ केवल दिमागी मेहनत नहीं था। बच्चों को हाथों से काम करने की आदत डाली जाती थी। विद्यालयों में मिट्टी के खिलौने बनाना, चित्रकारी, सिलाई, बढ़ईगीरी, बिजली कार्य, रेडियो मरम्मत जैसे प्राथमिक कौशल सिखाए जाते थे। इसका उद्देश्य यह नहीं था कि हर बच्चा कारीगर बने, बल्कि यह था कि...

वह श्रम का सम्मान करना सीखे।
किसी भी कार्य को छोटा न समझे।
आवश्यकता पड़ने पर अपने पैरों पर खड़ा हो सके।
यही शिक्षा बच्चों को रोजगारोन्मुख और आत्मनिर्भर बनाती थी।

एनसीसी, स्काउटिंग और सामाजिक चेतना

एनसीसी, स्काउटिंग और गाइड जैसे कार्यक्रम बच्चों में सेवा, अनुशासन और नेतृत्व के गुण विकसित करते थे। राष्ट्रसेवा, आपदा में सहायता, स्वच्छता अभियान और सामूहिक कार्यों के माध्यम से बच्चे समाज से जुड़ते थे। इन गतिविधियों से यह भाव विकसित होता था कि राष्ट्र की रक्षा और सेवा केवल सैनिकों की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि हर नागरिक का कर्तव्य है।

आज की शिक्षा प्रणाली : सुविधाएं बढ़ीं, संस्कार घटे

आज की शिक्षा-प्रणाली पर दृष्टि डालें तो एक विरोधाभास दिखाई देता है। भव्य भवन, स्मार्ट क्लास, एसी कमरे और महंगे उपकरण हैं, परंतु संस्कार, अनुशासन और राष्ट्रबोध का अभाव स्पष्ट दिखता है। पीटी और खेलकूद के पीरियड टाइम-टेबल में तो हैं, परंतु मैदान खाली है। कंप्यूटर शिक्षा के नाम पर बच्चों को मशीनों का आदी बनाया जा रहा है, सृजनशील नहीं। विद्यालयों में मोटी फीस, महंगी किताबें, ड्रेस और अतिरिक्त शुल्क ने शिक्षा को व्यवसाय बना दिया है। विडंबना यह है कि इतनी फीस के बाद भी बच्चों को ट्यूशन जाना पड़ता है।

ज्ञान का विस्फोट, विवेक का अभाव

आज का बच्चा तकनीक से परिचित है, परंतु अपने देश की आत्मा से अपरिचित है। उसे अंतरराष्ट्रीय क्रिकेटरों के आंकड़े याद हैं, लेकिन वह नहीं जानता कि हमारे स्वतंत्रता सेनानी कौन थे, हमारी नदियां, पर्वत और सीमाएं क्या हैं, हमारे महापुरुषों ने किन मूल्यों के लिए बलिदान दिया।

ऐसी शिक्षा सूचना तो देती है, संस्कार नहीं

राष्ट्रप्रेम के बिना शिक्षा : खोखली इमारत
जिस शिक्षा में राष्ट्र के प्रति कर्तव्य का बोध न हो, जिसमें समाज के प्रति उत्तरदायित्व न हो और जिसमें त्याग, सेवा और प्रेम का संस्कार न हो, वह शिक्षा राष्ट्र को मजबूत नहीं, कमजोर बनाती है। आज समाज में बढ़ते भ्रष्टाचार, स्वार्थ, हिंसा और संवेदनहीनता का एक बड़ा कारण यही संस्कारहीन शिक्षा है।

आवश्यकता : शिक्षा का पुनर्जागरण

आज समय की मांग है कि हम शिक्षा को पुनः उसके मूल उद्देश्य की ओर ले जाएं। हमें ऐसी शिक्षा चाहिए, जो चरित्र निर्माण करे, जो श्रम को सम्मान दे, जो राष्ट्रभक्ति को व्यवहार बनाए। विद्यालयों को पुनः संस्कार केंद्र बनाना होगा, शिक्षकों को पुनः गुरु का स्थान देना होगा, शिक्षा को पुनः सेवा बनाना होगा, व्यवसाय नहीं।

शिक्षा से राष्ट्र का भविष्य

यदि हमें एक सशक्त, स्वाभिमानी और समृद्ध भारत चाहिए तो हमें शिक्षा को संस्कार, श्रम और राष्ट्रबोध से जोड़ना ही होगा। शिक्षा का उद्देश्य केवल नौकरी नहीं, बल्कि चरित्रवान नागरिक और समर्थ राष्ट्र बनाना होना चाहिए। आज भी मैं अपने श्री महावीर स्कूल के अध्यापक मंडिया साहिब तथा अन्य अध्यापकों को नमन-स्मरण कर नमन करता हूं।

यही सच्ची शिक्षा है-यही राष्ट्र का भविष्य है।

राजनीति

सेवा और सहयोग ही जीवन की सच्ची धार्मिकता

कांतिलाल मांडोत

मानव जीवन केवल अपने लिए जीने का नाम नहीं है, बल्कि दूसरों के सुख-दुःख में सहभागी बनकर उनके जीवन को बेहतर बनाने का माध्यम भी है। पीड़ित मानवता की सेवा मनुष्य की उदात्त भावनाओं की अभिव्यक्ति है। करुणा, संवेदना, सहयोग और परोपकार केवल नैतिक गुण नहीं, बल्कि वास्तविक धार्मिकता के आधार हैं। धर्म पूजा-पाठ, व्रत, उपवास और अनुष्ठानों तक सीमित नहीं है, उसकी सार्थकता दूसरों के प्रति हमारे व्यवहार में दिखाई देती है। मनुष्य के जन्म से लेकर जीवन के अंतिम पड़ाव तक असंख्य परिचित और अपरिचित लोग उसके विकास में योगदान देते हैं। कल्पना कीजिए, सड़क पर खेल रहे किसी बच्चे की ओर तेज गति से वाहन बढ़ रहा हो और कोई राहगीर तत्काल उसे बचा ले। उस व्यक्ति का बच्चे से कोई परिचय या पारिवारिक संबंध नहीं होता, फिर भी मानवीय संवेदना उसे ऐसा करने के लिए प्रेरित करती है। किसी के जीवन की रक्षा करना अभयदान है, जिसका मूल्य किसी धन-संपत्ति से नहीं आंका जा सकता। यही सच्ची मानवता और आत्मिक धर्म है। वास्तव में हमारा जीवन हजारों अनजान हाथों के सहयोग से आगे बढ़ता है। किसान अन्न उपजाता है, श्रमिक निर्माण करता है, शिक्षक ज्ञान देता है और चिकित्सक स्वास्थ्य की रक्षा करता है। समाज का प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी रूप में दूसरों के जीवन को सुगम बनाता है। इसलिए मानवता के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने का श्रेष्ठ मार्ग भी दूसरों की सेवा करना ही है। भारतीय संस्कृति का मूल आधार सेवा, सहयोग, करुणा और जीवदया रहा है। जैन परंपरा के अनुसार भगवान ऋषभदेव ने कल्पवृक्षों के विच्छेद के बाद मानव समाज को कृषि सहित विभिन्न आजीविका संबंधी व्यवस्थाओं का ज्ञान प्रदान किया। इसका उद्देश्य जीवन को व्यवस्थित और सुरक्षित बनाना था। ऐसे आदर्श हमें सिखाते हैं कि संस्कृति की वास्तविक पहचान केवल परंपराओं में नहीं, बल्कि मानव कल्याण के कार्यों में होती है। धन संचय को जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य नहीं बनाना चाहिए। धन की सार्थकता तभी है, जब उसका उपयोग स्वयं के साथ जरूरतमंदों के कल्याण में भी हो। गरीब बच्चों की शिक्षा, असहायों की चिकित्सा, भूखों को भोजन और जरूरतमंदों को सहारा देना धन का श्रेष्ठ सदुपयोग है।

संपादकीय

जब जनता ने कहा—बस, अब बहुत हुआ...

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने चुनाव प्रचार के दौरान मतदाताओं से कहा था कि वे मतदान को उनके नेतृत्व पर जनमत संग्रह मानें। 3 नवंबर के मध्यावधि चुनाव ने इस चुनौती का जवाब दे दिया। डेमोक्रेटिक पार्टी ने प्रतिनिधि सभा और सीनेट, दोनों में बहुमत हासिल कर लिया। एसोसिएटेड प्रेस के मुताबिक, डेमोक्रेट्स ने उन राज्यों में जीत दर्ज की जिन्हें रिपब्लिकन का गढ़ माना जाता था। टेक्सास में जेम्स टालारिको ने केन पैक्सटन



को हराकर सीनेट सीट जीती। दक्षिण कैरोलिना में एनी एंड्रयूज ने ट्रंप समर्थित डार्लिन ग्राहम को पराजित किया। कंसास में एडम हैमिल्टन की जीत ने 1932 के बाद पहली बार राज्य को डेमोक्रेटिक सीनेटर दिया। आयोवा, ओहायो और नॉर्थ कैरोलिना में भी जीत दर्ज की। प्रतिनिधि सभा में डेमोक्रेट्स की सफलता ने रिपब्लिकन बहुमत खत्म कर दिया। नई कांग्रेस में हकीम जेफ्रीज के स्पीकर बनने की संभावना है। ऐसा हुआ तो वे इस पद पर पहुंचने वाले पहले अश्वेत नेता होंगे। सीनेट में बहुमत से डेमोक्रेट्स को राष्ट्रपति की नियुक्तियों पर प्रभाव डालने का अवसर मिलेगा। संसदीय समितियां प्रशासन के कामकाज की जांच कर सकती हैं। राज्यपालों के चुनाव में भी डेमोक्रेट्स ने वापसी की। टेक्सास में जीना हिनोजोसा ने ग्रेग एबॉट को हराया। जॉर्जिया में कीशा लांस बॉटम्स जीतीं और वे किसी अमेरिकी राज्य की पहली अश्वेत महिला गवर्नर बनने जा रही हैं। ओहायो में एमी एक्टन ने विवेक रामास्वामी को पराजित किया, जबकि आयोवा में रॉब सैंड की जीत ने डेमोक्रेट्स को सत्ता में लौटाया। रिपब्लिकन पार्टी की हार के पीछे सबसे बड़ा मुद्दा अर्थव्यवस्था और महंगाई रहा। एसोसिएटेड प्रेस के मतदाता सर्वेक्षण में करीब 8 में से 10 मतदाताओं ने कहा कि महंगाई ने उनके परिवारों को मध्यम या गंभीर आर्थिक परेशानी में डाला। मतदाताओं ने अर्थव्यवस्था को खराब बताया। रोजमर्रा की वस्तुओं और ईंधन की बढ़ती कीमतों ने सरकार के आर्थिक दावों पर सवाल खड़े किए। ईरान के साथ युद्ध भी चुनाव का बड़ा मुद्दा बना। होर्मुज जलडमरूमध्य से जुड़े तनाव ने ऊर्जा आपूर्ति और ईंधन कीमतों को लेकर चिंता बढ़ाई। मतदाताओं के एक हिस्से ने सैन्य कार्रवाई पर असहमति जताई। सरकारी भ्रष्टाचार और ट्रंप द्वारा निजी हितों को प्राथमिकता देने की धारणा ने भी नाराजगी बढ़ाई। युवा और हिस्पैनिक मतदाताओं का रिपब्लिकन पार्टी से दूर जाना नतीजों में दिखाई दिया। चुनाव के बाद ट्रंप ने परिणाम स्वीकार करने की बात कही, लेकिन हार को व्यक्तिगत असफलता मानने से इनकार किया। उन्होंने उम्मीदवारों की गुणवत्ता को जिम्मेदार ठहराया और डेमोक्रेटिक विधेयकों को वीटो करने की चेतावनी दी। इससे कांग्रेस और राष्ट्रपति के बीच टकराव बढ़ने की आशंका है। भारत के लिए भी इन नतीजों के मायने हैं। कांग्रेस में डेमोक्रेटिक बहुमत से ट्रंप प्रशासन की व्यापार, टैरिफ और विदेश नीति पर निगरानी बढ़ सकती है।

-राकेश जैन गोदिका

परिदृश्य

न्याय केवल अधिकार नहीं...

सुरेश सिंह बैस 'शाश्वत'

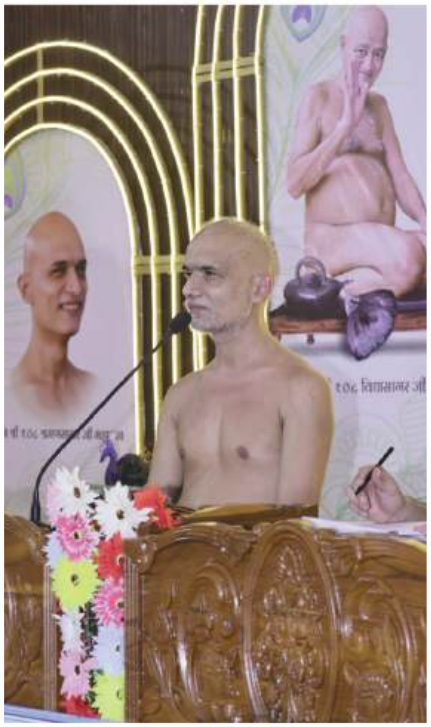
न्याय किसी भी लोकतांत्रिक समाज की आधारशिला है। इसकी वास्तविक सार्थकता तभी है, जब समाज के अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति को भी अपने अधिकारों की रक्षा और अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाने का अवसर मिले। आर्थिक तंगी, अशिक्षा या कानूनी जानकारी के अभाव में कोई व्यक्ति न्याय से वंचित रह जाए तो समानता का संवैधानिक आदर्श अधूरा रह जाता है। इसी उद्देश्य से भारत में प्रतिवर्ष 9 नवंबर को राष्ट्रीय विधिक सेवा दिवस मनाया जाता है। यह दिवस विधिक सेवा प्राधिकरण अधिनियम, 1987 के 9 नवंबर 1995 को लागू होने की स्मृति में मनाया जाता है। इसका प्रमुख उद्देश्य जरूरतमंदों को निःशुल्क कानूनी सहायता उपलब्ध कराना और आम नागरिकों को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करना है। भारतीय संविधान का अनुच्छेद 14 कानून के समक्ष समानता की गारंटी देता है, जबकि अनुच्छेद 39-क आर्थिक अथवा अन्य अक्षमताओं के कारण किसी नागरिक को न्याय पाने के अवसर से वंचित न होने देने की व्यवस्था करता है। निःशुल्क विधिक सहायता इसी संवैधानिक भावना का महत्वपूर्ण आधार है। विधिक सेवा का अर्थ केवल अदालत में मुकदमा लड़ना नहीं है। कानूनी सलाह, अधिवक्ता की सहायता, आवश्यक दस्तावेज तैयार करवाना और अपील संबंधी कार्यवाही में सहयोग भी इसके अंतर्गत आते हैं। इसके लिए राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण, राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण और तालुका विधिक सेवा समितियां कार्यरत हैं। विधिक सेवा प्राधिकरण अधिनियम की धारा 12 के अनुसार महिलाओं, बच्चों, अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के सदस्यों, मानव तस्करी और बेगार के पीड़ितों, दिव्यांग व्यक्तियों, औद्योगिक श्रमिकों तथा अभिरक्षा में रखे गए व्यक्तियों को निःशुल्क कानूनी सहायता का अधिकार है। इसके अतिरिक्त निर्धारित आय सीमा से कम आय वाले पात्र व्यक्ति भी इसका लाभ ले सकते हैं। आपदा, हिंसा और अन्य विशेष परिस्थितियों से प्रभावित लोगों को भी नियमानुसार सहायता मिल सकती है। यह सहायता दीवानी और आपराधिक, दोनों प्रकार के मामलों में उपलब्ध है। पात्र व्यक्तियों को अधिवक्ता की सेवाएं, कानूनी दस्तावेज तैयार करने, न्यायालयीन कार्यवाही और निर्धारित प्रक्रियागत खर्चों में सहायता दी जाती है। इसके लिए आवेदन जमा करने का कोई शुल्क नहीं लिया जाता। हालांकि सहायता प्राप्त करने के लिए निर्धारित पात्रता और मामले की वास्तविकता संबंधी शर्तें पूरी करना आवश्यक है। जरूरतमंद व्यक्ति अपने जिले के न्यायालय परिसर में स्थित जिला विधिक सेवा प्राधिकरण अथवा तालुका न्यायालय में संबंधित विधिक सेवा समिति से संपर्क कर सकता है। राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण की आधिकारिक वेबसाइट पर भी आवेदन और सहायता संबंधी जानकारी उपलब्ध है। जो व्यक्ति पढ़ने-लिखने में असमर्थ हैं, वे विधिक सहायता स्वयंसेवकों की मदद से आवेदन कर सकते हैं। इस व्यवस्था का एक महत्वपूर्ण माध्यम लोक अदालतें हैं। इनके जरिए समझौते योग्य विवादों का समाधान पक्षकारों की सहमति से किया जाता है। इससे समय और धन की बचत होती है तथा न्यायालयों पर मुकदमों का बोझ कम करने में भी मदद मिलती है। हालांकि प्रत्येक विवाद लोक अदालत में निपटाने योग्य नहीं होता। आज भी समाज में अनेक लोग घरेलू हिंसा, श्रमिक अधिकारों, संपत्ति विवादों, उपभोक्ता संरक्षण और सरकारी योजनाओं से जुड़े अपने कानूनी अधिकारों से अनजान हैं।

राघौगढ़ में श्रमण धारा प्रवचनमाला

गलत निमित्तों से बचकर जीवन को शांतिमय बनाएं : मुनि श्रमण सागर जी

राघौगढ़.शाबाश इंडिया

आचार्य गुरुवर विद्यासागर जी महाराज के परम प्रभावक शिष्य, प्रवचन वाचस्पति, ओजस्वी वक्ता एवं बुंदेली महाकवि मुनि श्रमण सागर जी महाराज ने राघौगढ़ में जारी श्रमण धारा प्रवचनमाला के 110वें दिन 'गलत निमित्तों से कैसे बचें' विषय पर मंगल प्रवचन दिए। उन्होंने कहा कि जीवन में अनेक ऐसे संयोग आते हैं, जिनके प्रभाव में आकर व्यक्ति अपने मार्ग से भटक जाता है और अपना जीवन बर्बाद कर लेता है। इसलिए गलत निमित्तों से बचना और सद्विचारों का साथ बनाए रखना आवश्यक है। मुनि श्री ने भगवान महावीर के मौसा राजा श्रेणिक का उदाहरण देते हुए बताया कि एक बार राजा श्रेणिक ने जंगल में तपस्या कर रहे यशोधर मुनिराज पर 500 कुत्ते छोड़ दिए, लेकिन सभी कुत्ते शांत होकर बैठ गए। इसके बाद राजा ने मुनिराज के गले में मृत सांप डाल दिया। राजमहल पहुंचकर उन्होंने यह घटना रानी चेलना को बताई। इस उपसर्ग के दौरान भी मुनिराज विचलित नहीं हुए और उन्होंने रानी चेलना तथा राजा श्रेणिक को धर्मवृद्धि का आशीर्वाद दिया। इस घटना से प्रभावित होकर राजा श्रेणिक जैन धर्म के अनुयायी बन गए। इसी क्रम में मुनि श्री ने जैन धर्म के अंतिम केवली जंबू स्वामी का प्रसंग सुनाया। उन्होंने बताया कि जंबू स्वामी का विवाह 8 योग्य कन्याओं के साथ हुआ था, लेकिन उनका मन सांसारिक भोग-विलास में आसक्त नहीं हुआ। उन्होंने अपनी आठों पत्नियों और राजमहल में चोरी करने आए चोर के साथ वैराग्य धारण कर दीक्षा ग्रहण की। मुनि श्री ने जैन धर्म के सुप्रसिद्ध माघनंदी मुनिराज का प्रसंग भी सुनाया। उन्होंने बताया कि एक गलत निमित्त के प्रभाव में आकर मुनिराज ने कुंभकार की पुत्री से विवाह कर लिया, लेकिन बाद में अपनी भूल का एहसास होने पर पुनः दीक्षा धारण कर ली। मुनि श्रमण सागर जी महाराज ने जल की एक बूंद का उदाहरण देते हुए कहा कि वही बूंद गन्ने में गिरकर मिठास, मिर्च में गिरकर तीखापन, स्वाति नक्षत्र में सीप में गिरकर मोती और सांप के मुंह में गिरकर विष का रूप ले लेती है। इसी प्रकार व्यक्ति का जीवन भी उसके संपर्क, वातावरण और संगति से प्रभावित होता है। जीवन में कदम-कदम पर ऐसे विपरीत संयोग आते हैं, जिनसे मन भटक सकता है और व्यक्ति गलत रास्ते पर चल पड़ता है। उन्होंने शराब, मांसाहार, जुआ और स्मैक जैसे नशों को जीवन तथा चरित्र के लिए घातक बताते हुए कहा कि चरित्र की कीमत पर अपना व्यक्तित्व नहीं बनाना चाहिए। संस्कारवान माता-पिता का दायित्व है कि वे बच्चों को बुरी आदतों से दूर रखें और उनमें अच्छे संस्कार विकसित करें। मुनि श्री ने विशेष रूप से राघौगढ़ में स्मैक के बढ़ते नशे पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि इस घातक नशे के कारण युवा पीढ़ी बबार्दी की ओर बढ़ रही है। नशे की लत में कुछ युवक घर और दुकानों का सामान बेचने के साथ चोरी जैसी गतिविधियों में भी लिप्त हो रहे हैं। युवा पीढ़ी को इस बुराई से बचाने के लिए माता-पिता को सजग रहना होगा। साथ ही प्रशासनिक स्तर पर भी प्रभावी प्रयास किए जाने आवश्यक हैं। प्रवचन के समापन अवसर पर मुनि श्री ने अपने गृहस्थ जीवन में दिसंबर 1996 में लिखी पहली कविता भी सुनाई। कविता का शीर्षक था—'कई कदम चले हम, कभी गलत चले, कभी सही'। कविता के माध्यम से उन्होंने जीवन की यात्रा और सही-गलत के अनुभवों को अभिव्यक्त किया। इस अवसर पर अभिभाषक संघ राघौगढ़ के अध्यक्ष संजय कुमार जैन के पुत्र एवं पुत्रवधू न्यायाधीश उत्कर्ष कुमार जैन एवं न्यायाधीश श्रीमती आयुषी जैन तथा पुत्र डॉ. आकर्ष जैन सहित राघौगढ़ के अभिमत जैन ने मुनि श्री के चरणों में श्रीफल भेंट कर आशीर्वाद प्राप्त किया। जैन समाज की ओर से सभी अतिथियों का दुपट्टा ओढ़ाकर एवं श्रीफल भेंट कर सम्मान किया गया।



पुष्पगिरी में दीपोत्सव प्रतिभा महोत्सव का आयोजन 7 नवंबर को, तीन प्रतियोगिताओं में मिलेंगे 1.41 लाख रुपए के पुरस्कार

रंगोली, वोकल फॉर लोकल पोस्टर और ऑनलाइन रील प्रतियोगिताओं में प्रतिभाओं को मिलेगा मंच



सोनकच्छ.शाबाश इंडिया

भारतीय संस्कृति, रचनात्मकता और स्वदेशी उत्पादों को प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से पुष्पगिरी तीर्थ में 7 नवंबर को दीपावली के अवसर पर दीपोत्सव प्रतिभा महोत्सव का आयोजन किया जाएगा। परम पूज्य अंतर्मना आचार्य श्री 108 प्रसन्न सागर जी महाराज की प्रेरणादायी पहल 'हर मास एक उपवास' तथा पुष्पगिरी प्रणेता गणाचार्य श्री पुष्पदंत सागर जी महाराज के सान्निध्य में मां जिनवाणी पब्लिक स्कूल, पुष्पगिरी द्वारा यह आयोजन किया जा रहा है। महोत्सव के अंतर्गत 3 प्रमुख प्रतियोगिताएं आयोजित होंगी। इनमें रंगोली प्रतियोगिता, वोकल फॉर लोकल पोस्टर प्रस्तुति प्रतियोगिता तथा वोकल फॉर लोकल ऑनलाइन रील चैलेंज शामिल हैं। इन प्रतियोगिताओं के माध्यम से प्रतिभागियों को अपनी रचनात्मक एवं कलात्मक प्रतिभा प्रदर्शित करने के साथ भारतीय संस्कृति, स्थानीय उत्पादों और स्वदेशी वस्तुओं को अपनाने का संदेश जन-जन तक पहुंचाने का अवसर मिलेगा। आयोजन की विशेष बात यह है कि तीनों प्रतियोगिताओं में विजेताओं के लिए



आकर्षक पुरस्कार राशि निर्धारित की गई है। प्रत्येक प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागी को 21 हजार रुपए, द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले को 15 हजार रुपए तथा तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले को 11 हजार रुपए प्रदान किए जाएंगे। इस प्रकार तीनों प्रतियोगिताओं के लिए कुल 1 लाख 41 हजार रुपए की पुरस्कार राशि रखी गई है। इसके अतिरिक्त सभी प्रतिभागियों को सांत्वना पुरस्कार देकर उनका उत्साहवर्धन किया जाएगा। प्रवक्ता रोमिल जैन ने बताया कि महोत्सव का उद्देश्य केवल प्रतियोगिताओं का आयोजन करना नहीं, बल्कि विद्यार्थियों सहित समाज के विभिन्न आयु वर्गों में छिपी प्रतिभाओं को उचित मंच प्रदान करना है। इसके साथ ही नई पीढ़ी को भारतीय परंपराओं, स्वदेशी उत्पादों, स्थानीय उद्यमियों और आत्मनिर्भर भारत की अवधारणा से जोड़ना भी आयोजन का प्रमुख उद्देश्य है। दीपावली के उल्लास के बीच आयोजित यह प्रतिभा महोत्सव कला, संस्कृति और स्वदेशी भावना का अनूठा संगम बनेगा। कार्यक्रम 7 नवंबर को पुष्पगिरी तीर्थ, सोनकच्छ में आयोजित होगा। प्रतियोगिताओं में भाग लेने के इच्छुक प्रतिभागी पंजीकरण के लिए मां जिनवाणी पब्लिक स्कूल में संपर्क कर सकते हैं। यह जानकारी प्रचार-प्रसार संयोजक रोमिल पाटणी, सोनकच्छ, नरेंद्र अजमेरा एवं पीयूष कासलीवाल, औरंगाबाद ने दी।

श्री सिद्धचक्र महामंडल विधान एवं विश्वशांति महायज्ञ का भव्य समापन

आचार्य श्री सौभाग्य सागर जी महाराज के सान्निध्य में श्रद्धालुओं ने की विश्वशांति की मंगल कामना



आगरा.शाबाश इंडिया

जयपुर हाउस स्थित श्री शांतिनाथ दिगंबर जैन मंदिर, टीचर्स कॉलोनी में आचार्य श्री सौभाग्य सागर जी महाराज ससंघ के पावन सान्निध्य में आयोजित 4 दिवसीय श्री सिद्धचक्र महामंडल विधान एवं विश्वशांति महायज्ञ का गुरुवार को श्रद्धा, भक्ति और उत्साह के साथ भव्य समापन हुआ। श्री शांतिनाथ दिगंबर जैन मंदिर समिति के तत्वावधान में पहली बार आयोजित इस धार्मिक अनुष्ठान के अंतिम दिन मंदिर परिसर में बड़ी संख्या में श्रद्धालु उमड़े। पूरे परिसर में भक्तिमय वातावरण बना रहा। कार्यक्रम का शुभारंभ प्रातः भगवान जिनेंद्र देव के अभिषेक एवं शांतिधारा के साथ हुआ। इसके पश्चात विधि-विधान और मंत्रोच्चार के बीच श्री सिद्धचक्र महामंडल विधान की पूजा-अर्चना संपन्न हुई। श्रद्धालुओं ने भक्तिभाव से अर्घ्य समर्पित कर भगवान की आराधना की तथा विश्व में सुख, शांति, समृद्धि और खुशहाली की मंगल कामना की। विधान के अंतिम दिवस पर धार्मिक क्रियाओं के साथ विश्वशांति महायज्ञ का आयोजन किया गया। श्रद्धालुओं ने यज्ञ में आहुतियां समर्पित कर धर्म, अहिंसा और सदाचार के मार्ग पर चलने का संकल्प लिया। इस अवसर पर आचार्य श्री सौभाग्य सागर जी महाराज ने धर्मसभा को संबोधित करते हुए कहा कि धार्मिक अनुष्ठान व्यक्ति के जीवन में आत्मशुद्धि, संयम और आध्यात्मिक चेतना का संचार करते हैं। श्री सिद्धचक्र महामंडल विधान आत्मकल्याण और मोक्षमार्ग की आराधना का विशेष माध्यम है। मनुष्य को अपने जीवन में धर्म, अहिंसा, सत्य और सदाचार को अपनाते हुए परोपकार की भावना के साथ जीवन व्यतीत करना चाहिए। आचार्य श्री ने कहा कि सच्ची शांति बाहरी साधनों से नहीं, बल्कि आत्मा की निर्मलता, संयम और सकारात्मक विचारों से प्राप्त होती है। जब व्यक्ति अपने भीतर के विकारों को दूर कर सद्भाव और करुणा को अपनाता है, तभी जीवन में वास्तविक शांति का अनुभव होता है। 4 दिनों तक चले इस धार्मिक आयोजन में प्रतिदिन बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने शामिल होकर पूजा-अर्चना एवं विभिन्न धार्मिक क्रियाओं में सहभागिता की। मंदिर परिसर भक्ति गीतों, मंत्रोच्चार और भगवान के जयकारों से गुंजायमान रहा। आयोजन के सफल समापन पर मंदिर समिति के पदाधिकारियों ने सभी श्रद्धालुओं, सहयोगियों एवं आयोजन में सहभागी बने समाजबंधुओं का आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर राकेश जैन पदेवाले, सुबोध जैन, दीपक जैन, विनोद रांवका, शैलू रांवका, मनोज जैन, ऋषभ जैन, श्रेयांस जैन, शुभम जैन सहित मंदिर समिति के पदाधिकारी, समाज के गणमान्य नागरिक तथा बड़ी संख्या में जैन समाज के महिला एवं पुरुष श्रद्धालु उपस्थित रहे।



एम्बिशन किड्स एकेडमी में दीपोत्सव की धूम, बच्चों की रचनात्मकता और स्नेह मिलन का दिखा अनूठा संगम







जयपुर.शाबाश इंडिया

दीपों की जगमगाहट, रंग-बिरंगी सजावट और नन्हे-मुन्ने बच्चों की खिलखिलाहट के बीच एम्बिशन किड्स एकेडमी में बुधवार, 4 नवंबर 2026 को दीपावली उत्सव हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर पूरा विद्यालय परिसर उत्सव के रंगों में सराबोर नजर आया। समारोह में भारतीय संस्कृति, बच्चों की रचनात्मक प्रतिभा और पर्यावरण संरक्षण का सुंदर संगम देखने को मिला। आयोजन का उद्देश्य विद्यार्थियों को भारतीय संस्कृति एवं त्योहारों के महत्व से परिचित कराने के साथ सुरक्षित और पर्यावरण अनुकूल दीपावली मनाने के लिए प्रेरित करना था। कार्यक्रम का शुभारंभ विद्यालय के चेयरमैन डॉ. एम.एल. जैन 'मणि' एवं सचिव डॉ. शांति जैन ने मां सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्वलित कर किया। इस अवसर पर विद्यालय की प्रधानाचार्या डॉ. अलका जैन एवं उपप्रधानाचार्या श्रीमती अनीता जैन भी उपस्थित रहीं। उत्सव के दौरान विभिन्न रचनात्मक एवं मनोरंजक गतिविधियों का आयोजन किया गया, जिनमें विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लेकर अपनी कलात्मक प्रतिभा का प्रदर्शन किया। पारंपरिक दीपक सजाओ गतिविधि में बच्चों ने मिट्टी के दीयों को आकर्षक रंगों और कलात्मक डिजाइनों से सजाया। वहीं, रंगोली निर्माण गतिविधि के दौरान विद्यालय परिसर सुंदर एवं मनमोहक रंगोलियों से सज उठा। पर्यावरण संरक्षण का संदेश देने के उद्देश्य से विद्यार्थियों ने पर्यावरण अनुकूल दीपावली विषय पर पोस्टर निर्माण गतिविधि में भी भाग लिया। बच्चों ने अपने आकर्षक पोस्टरों के माध्यम से सुरक्षित, स्वच्छ, हरित और प्रदूषणमुक्त दीपावली मनाने का संदेश दिया। इस अवसर पर उपप्रधानाचार्या श्रीमती अनीता जैन ने विद्यार्थियों को दीपावली के सांस्कृतिक एवं सामाजिक महत्व की जानकारी दी। उन्होंने बच्चों को पर्यावरण के अनुकूल त्योहार मनाने, पटाखों से होने वाले प्रदूषण से बचने तथा स्वच्छ एवं सुरक्षित वातावरण बनाए रखने के लिए प्रेरित किया। प्रधानाचार्या डॉ. अलका जैन ने विद्यार्थियों की रचनात्मकता और उत्साह की सराहना करते हुए कहा कि त्योहार केवल खुशियां मनाने का अवसर नहीं होते, बल्कि हमारी सांस्कृतिक विरासत, नैतिक मूल्यों और सामाजिक जिम्मेदारियों को समझने का माध्यम भी हैं। उन्होंने आयोजन को सफल बनाने में सहयोग देने वाले अभिभावकों एवं शिक्षकों का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम के अंत में प्रतिभागी विद्यार्थियों को विद्यालय प्रबंधन की ओर से पुरस्कृत एवं सम्मानित किया गया। समारोह के समापन अवसर पर विद्यालय के डायरेक्टर डॉ. मनीष जैन ने धन्यवाद ज्ञापित किया। उन्होंने चेयरमैन, सचिव, प्रधानाचार्या, उपप्रधानाचार्या, शिक्षकगण, अभिभावकों एवं विद्यार्थियों का आयोजन को सफल बनाने में दिए गए सहयोग के लिए आभार व्यक्त किया। इस अवसर को और यादगार बनाते हुए एम्बिशन प्रबंधन की ओर से शिक्षिकाओं एवं स्टाफ सदस्यों के लिए दीपावली स्नेह मिलन समारोह भी आयोजित किया गया। प्रबंधन ने सभी सदस्यों को उपहार एवं मिठाइयां भेंट कर दीपावली की शुभकामनाएं दीं। इस दौरान सभी शिक्षिकाओं एवं स्टाफ सदस्यों ने सामूहिक रूप से दोपहर का भोजन किया। सभी ने इस आत्मीय आयोजन के लिए विद्यालय प्रबंधन के प्रति आभार व्यक्त किया। स्नेह मिलन समारोह ने विद्यालय परिवार में आपसी प्रेम, सौहार्द और पारिवारिक एकता की भावना को और मजबूत किया। इस प्रकार एम्बिशन किड्स एकेडमी का दीपावली समारोह बच्चों के लिए आनंद, रचनात्मकता, सांस्कृतिक शिक्षा और पर्यावरण संरक्षण का सुंदर संगम बना। वहीं, स्नेह मिलन समारोह ने विद्यालय परिवार के सदस्यों के बीच अपनत्व, सहयोग और आपसी सद्भाव को नई ऊर्जा प्रदान की।



प्रो. (डॉ.) रेणु जोशी को "लाइफटाइम अचीवमेंट ऑफ द ईयर अवॉर्ड 2026" से सम्मानित किया गया

जयपुर.शाबाश इंडिया। एस.एस. जैन सुबोध पी.जी. महाविद्यालय (स्वायत्त), जयपुर के लिए यह अत्यंत गौरव और हर्ष का विषय है कि महाविद्यालय की प्राचार्य प्रो. (डॉ.) रेणु जोशी को शिक्षा के क्षेत्र में उनके उत्कृष्ट योगदान, उल्लेखनीय उपलब्धियों, समर्पण और शैक्षणिक उत्कृष्टता के लिए प्रतिष्ठित ''लाइफटाइम अचीवमेंट ऑफ द ईयर अवॉर्ड 2026'' से सम्मानित किया गया। यह सम्मान 30 अक्टूबर 2026 को नई दिल्ली स्थित होटल ली मेरिडियन में आयोजित 8वें नेशनल एजुकेशन कॉन्क्लेव 2026 के अवसर पर प्रदान किया गया। इंटेक्सीलेंट चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री (आईसीसीआई) एवं फेमफाइंडर्स मीडिया के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित इस राष्ट्रीय सम्मेलन की थीम ''इंडस्ट्री-एकेडेमिया इंटरफेसः ब्रिजिंग नॉलेज, बिल्डिंग फ्यूचर' रही। प्रो. (डॉ.) रेणु जोशी को यह सम्मान शिक्षा के क्षेत्र में उनके दीर्घकालीन योगदान, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के प्रति प्रतिबद्धता, संस्थागत नेतृत्व तथा अकादमिक विकास में किए गए महत्वपूर्ण प्रयासों के लिए प्रदान किया गया। उनके कुशल नेतृत्व में एस.एस. जैन सुबोध पी.जी. महाविद्यालय ने शैक्षणिक गुणवत्ता, नवाचार, कौशल विकास, अनुसंधान और सामाजिक सरोकारों के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की है। इस अवसर पर आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन में देशभर के शिक्षाविदों, अकादमिक विशेषज्ञों, उद्यमियों, स्टार्टअप प्रतिनिधियों और विभिन्न संस्थानों के प्रतिनिधियों ने सहभागिता की। सम्मेलन में शिक्षा एवं उद्योग के बीच बेहतर समन्वय स्थापित करने, नवाचार को बढ़ावा देने, कौशल विकास तथा भविष्य की शिक्षा व्यवस्था को अधिक प्रभावी बनाने जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर विचार-विमर्श किया गया। इस उपलब्धि पर महाविद्यालय परिवार ने हर्ष व्यक्त करते हुए प्रो. (डॉ.) रेणु जोशी को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं दीं। साथ ही विश्वास जताया कि उनका कुशल नेतृत्व, दूरदर्शिता और शिक्षा के प्रति समर्पण भविष्य में भी संस्थान को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाने

जयपुर से जुड़ी पिया डांडिया ने अमेरिका में रचा इतिहास, फ्लोरिडा से प्रतिनिधि सभा के लिए निर्वाचित

जयपुर.शाबाश इंडिया

जयपुर के जैन समाज के लिए गर्व और हर्ष का विषय है कि पिया डांडिया ने अमेरिका के फ्लोरिडा राज्य के 22वें संसदीय क्षेत्र से डेमोक्रेटिक पार्टी के टिकट पर अमेरिकी प्रतिनिधि सभा का चुनाव जीत लिया है। उन्होंने रिपब्लिकन पार्टी के उम्मीदवार केसी असकर को पराजित कर यह महत्वपूर्ण जीत दर्ज की। पिया की इस सफलता से जयपुर से जुड़े उनके परिवार और भारतीय मूल के लोगों में खुशी का माहौल है। पिया डांडिया का परिवार जयपुर से जुड़ा हुआ है। प्राप्त जानकारी के अनुसार, वह जयपुर के प्रसिद्ध शिक्षाविद एवं गणितज्ञ स्वर्गीय तेजकरण डांडिया के बड़े भाई तथा एस.एम.एस. मेडिकल कॉलेज, जयपुर के प्रोफेसर रहे शतायु डॉ. प्रेमचंद डांडिया की पोती हैं। पिया अमेरिका में बसे और सोशल मीडिया पर सक्रिय अवि डांडिया की भतीजी भी हैं। जयपुर के वयोवृद्ध पत्रकार मिलापचंद डांडिया का भी पिया के परिवार से निकट संबंध है। वह उनके दादा के भाई हैं। पिया ने फ्लोरिडा के 22वें संसदीय क्षेत्र में अपने प्रतिद्वंद्वी केसी असकर को हराकर अमेरिकी प्रतिनिधि सभा में जगह बनाई है। उनकी जीत के साथ वह फ्लोरिडा से अमेरिकी कांग्रेस के लिए निर्वाचित होने वाली पहली भारतीय मूल की महिला बनी हैं। वह पूर्व में शिक्षिका और स्कूल प्रिंसिपल के रूप में भी अपनी पहचान बना चुकी हैं। पिया की इस उपलब्धि पर जयपुर के जैन समाज और उनके परिवारजनों ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए उन्हें बधाई एवं शुभकामनाएं दी हैं। उनकी जीत को शिक्षा, सामाजिक योगदान और भारतीय मूल के लोगों की बढ़ती राजनीतिक भागीदारी के



लिहाज से महत्वपूर्ण उपलब्धि माना जा रहा है।

भगवान पद्मप्रभु का जन्म एवं तप कल्याणक महोत्सव 7 नवंबर को

जयपुर.शाबाश इंडिया

शनिवार, 7 नवंबर 2026 को कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी, वीर निर्वाण संवत 2552 के पावन अवसर पर देवाधिदेव 1008 श्री पद्मप्रभु भगवान का जन्म एवं तप कल्याणक महोत्सव मनाया जाएगा। इसी दिन देवाधिदेव तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी का अंतिम देशना दिवस भी है, जिसे जैन परंपरा में धन्य त्रयोदशी के रूप में जाना जाता है। मान्यता है कि त्रयोदशी के दिन भगवान महावीर ने योग निरोध कर आत्मध्यान में लीन होकर इस तिथि को धन्य किया था। इसी कारण यह दिन धन्य त्रयोदशी कहलाता है और लोक परंपरा में धनतेरस के नाम से भी प्रसिद्ध है।



भगवान पद्मप्रभु : परिचय एवं विशेषताएं

जन्मभूमिः कौशांबी, उत्तर प्रदेश
पिताः महाराजा धरणराज
माताः महारानी सुसीमा
वर्णः क्षत्रिय
वंशः इक्ष्वाकु
देहवर्णः पद्मराग मणि के समान
चिह्नः लाल कमल
आयुः 30 लाख पूर्व
अवगाहनाः 250 धनुष
गर्भ कल्याणकः माघ कृष्ण षष्ठी
जन्म कल्याणकः कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी
तप कल्याणकः कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी
दीक्षा स्थलः मनोहर वन (प्रभाषगिरि)
दीक्षा वृक्षः प्रियंगु
प्रथम आहारः राजा सोमदत्त द्वारा अर्पित खीर
केवलज्ञानः चैत्र शुक्ल पूर्णिमा
मोक्षः फाल्गुन कृष्ण चतुर्थी
मोक्षस्थलः सम्मेद शिखर पर्वत
समवसरण में गणधरः श्री वज्रचामर आदि 110
समवसरण में मुनिः 3 लाख 30 हजार
समवसरण में गणिनीः आर्यिका रतिषेणा
समवसरण में आर्यिकाएंः 4 लाख 20 हजार
समवसरण में श्रावकः 3 लाख
समवसरण में श्राविकाएंः 5 लाख

गर्भ एवं जन्म कल्याणकः जैन मान्यता के अनुसार, जम्बूद्वीप की कौशांबी नगरी में महाराजा धरणराज की महारानी सुसीमा ने माघ कृष्ण षष्ठी के दिन अहमिंद्र जीव को अपने गर्भ में धारण किया। कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी के दिन उन्होंने पुत्ररत्न को जन्म दिया। जन्मोत्सव के पश्चात इंद्रों ने उनका नाम ''पद्मप्रभ'' रखा।

तप कल्याणक

एक बार राजमहल के द्वार पर बंधे हाथी की दशा के बारे में सुनकर भगवान पद्मप्रभु को अपने पूर्व भवों का स्मरण हो गया। इससे उनके मन में वैराग्य उत्पन्न हुआ। देवों द्वारा लाई गई ''निवृत्ति'' नामक पालकी में विराजमान होकर वे मनोहर वन पहुंचे। वहां कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी के दिन उन्होंने दीक्षा धारण कर सांसारिक जीवन का त्याग किया।

केवलज्ञान एवं मोक्ष कल्याणक

छह माह तक छद्मस्थ अवस्था में तप एवं साधना करने के बाद चैत्र शुक्ल पूर्णिमा के दिन मध्याह्न में भगवान पद्मप्रभु को केवलज्ञान की प्राप्ति हुई। इसके पश्चात उन्होंने दीर्घकाल तक भव्य जीवों को धर्मोपदेश देकर धर्ममार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। अंततः फाल्गुन कृष्ण चतुर्थी के दिन सम्मेद शिखर पर्वत से मोक्ष प्राप्त किया।

-विनोद जैन कोटखावदा

आचार्य विशद सागर महाराज ससंघ का पिच्छिका परिवर्तन समारोह 10 नवंबर को



जयपुर.शाबाश इंडिया

चित्रकूट कॉलोनी स्थित श्री महावीर दिगंबर जैन मंदिर में 8 से 10 नवंबर तक तीन दिवसीय धार्मिक आयोजन होंगे। इस दौरान चातुर्मासरत आचार्य 108 विशद सागर महाराज ससंघ का भव्य पिच्छिका परिवर्तन समारोह मंगलवार, 10 नवंबर को दोपहर 1:15 बजे से आयोजित किया जाएगा। श्री महावीर जिनालय, चित्रकूट कॉलोनी, सांगानेर, जयपुर में चातुर्मासरत गणाचार्य विराग सागर महाराज के परम तेजस्वी शिष्य, अकलंक उपाधि से अलंकृत एवं साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति आचार्य 108 विशद सागर महाराज के सान्निध्य में यह आयोजन होगा। उनके साथ संघस्थ स्थविर मुनि विशाल सागर महाराज, मुनि विभोर सागर महाराज, मुनि विलक्ष्य सागर महाराज, मुनि विपिन सागर महाराज, आर्यिका भक्ति भारती माताजी एवं क्षुल्लिका वात्सल्य भारती माताजी ससंघ विराजमान हैं। मंदिर समिति के अध्यक्ष अनिल जैन काशीपुरा एवं महामंत्री मूलचंद पाटनी ने बताया कि मंगलवार, 10 नवंबर को पिच्छिका परिवर्तन समारोह के अंतर्गत मंच उद्घाटन, चित्र अनावरण, दीप प्रज्ज्वलन, संगीतमय पूजा, आचार्यश्री के पाद प्रक्षालन, शास्त्र भेंट एवं आचार्यश्री के करकमलों से चातुर्मास के मंगल कलश प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त होगा। इसके बाद संगीतमय मंगलाचरण, अतिथियों का सम्मान और आचार्यश्री के मंगल प्रवचन होंगे। दोपहर 3:45 बजे संघ का पिच्छिका परिवर्तन किया जाएगा। इसके पश्चात समिति की ओर से अतिथियों का सम्मान होगा तथा सकल जैन समाज का वात्सल्य सहभोज आयोजित किया जाएगा।

गणाचार्य विराग सागर महाराज का आचार्य पदारोहण समारोह 8 नवंबर को

प्रचार संयोजक विनोद जैन कोटखावदा एवं एडवोकेट महावीर सुरेंद्र जैन ने बताया कि रविवार, 8 नवंबर को प्रातः अभिषेक एवं शांतिधारा के बाद गणाचार्य विराग सागर महामुनिराज के अवतरण दिवस के अवसर पर आचार्य पदारोहण पूजा आयोजित की जाएगी। इस अवसर पर चित्र अनावरण, मंगलाचरण, पाद प्रक्षालन, शास्त्र भेंट एवं प्रवचन होंगे। सायंकाल महाआरती के बाद जिज्ञासा समाधान कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। सोमवार, 9 नवंबर को मंदिर परिसर में चातुर्मास निष्ठापन समारोह आयोजित किया जाएगा। इस अवसर पर प्रातः अभिषेक एवं शांतिधारा के बाद भगवान महावीर स्वामी की पूजा-अर्चना की जाएगी। इसके पश्चात भगवान को निर्वाण लाडू अर्पित किया जाएगा।

122 यात्रियों की बद्रीनाथ-अष्टापद तीर्थयात्रा सानंद संपन्न

धुलियान.शाबाश इंडिया

पुण्यार्जक परिवार सुजीत कुमार जैन गंगवाल, पुत्र श्री बिमल कुमार जी एवं स्वर्गीय निर्मला देवी गंगवाल, धुलियान के सौजन्य से धुलियान सहित विभिन्न क्षेत्रों के करीब 122 श्रद्धालुओं का तीर्थयात्रा संघ 12 ट्रैवलर बसों के माध्यम से बद्रीनाथ, अष्टापद सहित विभिन्न तीर्थस्थलों के दर्शन कर सकुशल लौट आया। यात्रा संघ का शुभारंभ 22 अक्टूबर 2026 को धुलियान से हुआ। यात्रा के दौरान श्रद्धालुओं ने दिल्ली होते हुए हस्तिनापुर एवं वहलनाजी के दर्शन किए और इसके बाद हरिद्वार पहुंचे। वहां से यात्रा संघ नदियों के संगम स्थल रुद्रप्रयाग पहुंचा। 27 अक्टूबर की शाम रुद्रप्रयाग से आदिनाथ भगवान के निर्वाण क्षेत्र अष्टापद की यात्रा की गई। वहां के मनोरम प्राकृतिक वातावरण में सभी यात्रियों ने दर्शन एवं पूजन का लाभ लिया। दर्शन-पूजन के उपरांत छह माह के लिए जैन मंदिर के पट बंद हो गए। इसके बाद यात्रा संघ ने बद्रीनाथ, ऋषिकेश और ओली चाइना बाजार सहित विभिन्न स्थलों का भ्रमण करते हुए देहरादून पहुंचकर विराजमान आर्यिका पूर्णमति माताजी ससंघ के दर्शन किए और उनका आशीर्वाद प्राप्त किया। इस अवसर पर अगले वर्ष माताजी ससंघ का धुलियान में चातुर्मास कराने के लिए श्रीफल भेंट कर विनम्र निवेदन भी किया गया। यात्रा के अंतिम चरण में संघ दिल्ली पहुंचा, जहां श्रद्धालुओं को आचार्य विशुद्ध सागर महाराज ससंघ एवं आचार्य विनम्र सागर महाराज ससंघ के दर्शन और आशीर्वाद प्राप्त करने का सौभाग्य मिला। अंततः यात्रा संघ 2 नवंबर 2026 को सकुशल एवं सफलतापूर्वक धुलियान लौट आया। इस तीर्थयात्रा के सफल आयोजन से सभी यात्रियों में हर्ष और धार्मिक उत्साह का माहौल रहा।



संकलन : संजय कुमार जैन बड़जात्या, धुलियान

महावीर इंटरनेशनल ने स्वास्थ्य केंद्र के मेडिकल स्टाफ को वितरित कीं जीवनरक्षक टैबलेट

नर्सिंग स्टाफ ने सिंगल यूज प्लास्टिक का उपयोग नहीं करने की ली शपथ



बांसवाड़ा.शाबाश इंडिया

महावीर इंटरनेशनल गढ़ी-परतापुर की ओर से राजकीय आदर्श प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, आंजना, जिला बांसवाड़ा में आयोजित विशेष कार्यक्रम में मेडिकल स्टाफ को हृदयाघात की स्थिति में प्राथमिक सहायता उपलब्ध कराने के उद्देश्य से जीवनरक्षक टैबलेट वितरित की गईं। इस अवसर पर नर्सिंग स्टाफ ने सिंगल यूज प्लास्टिक का उपयोग नहीं करने की शपथ भी ली। कार्यक्रम की अध्यक्षता नर्सिंग ऑफिसर प्रकाश चंद्र डामोर एवं एलएचवी इंदिरा भगौरा ने की। मुख्य वक्ता महावीर इंटरनेशनल के इंटरनेशनल डायरेक्टर (नॉलेज शेयरिंग एवं ई-चौपाल) अजीत कोठिया थे, जबकि चिराग जैन विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। कार्यक्रम के प्रारंभ में चिकित्सालय प्रबंधन की ओर से पीड़ित मानवता की सेवा के क्षेत्र में किए जा रहे कार्यों के लिए अजीत कोठिया का सम्मान किया गया। इसके बाद कोठिया ने किट में उपलब्ध टैबलेट के उपयोग की जानकारी देते हुए बताया कि हृदयाघात की स्थिति में समय पर प्राथमिक सहायता मिलने से मरीज को अस्पताल पहुंचाने तक महत्वपूर्ण समय मिल सकता है। उन्होंने अनियमित खान-पान, मधुमेह और उच्च रक्तचाप के कारण हृदयाघात के बढ़ते जोखिम पर भी प्रकाश डाला। इस अवसर पर मेडिकल स्टाफ को कुल 15 जीवनरक्षक टैबलेट वितरित की गईं। कार्यक्रम अध्यक्ष प्रकाश चंद्र डामोर ने महावीर इंटरनेशनल गढ़ी-परतापुर की इस पहल की मुक्तकंठ से प्रशंसा की और जनसेवा के इस कार्य के लिए अजीत कोठिया के प्रति आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन करते हुए कोठिया ने महावीर इंटरनेशनल की ओर से संचालित सेनेटरी नैपकिन वितरण, बेबी किट वितरण एवं रक्तदान कार्यक्रमों की जानकारी भी साझा की। धनतेरस के पावन अवसर पर उन्होंने नर्सिंग स्टाफ को सिंगल यूज प्लास्टिक का उपयोग नहीं करने की शपथ दिलाई। कार्यक्रम का संचालन एवं आभार प्रदर्शन रूबीना पठान ने किया। आयोजन में संजय खांट, हर्षिला दर्जी, प्रवीणा पारगी एवं प्रेमिला डामोर सहित मेडिकल स्टाफ के कई सदस्यों ने सहभागिता की।

दीपावली निर्वाण और केवलज्ञान का प्रतीक है...



पदम चन्द गांधी @ 9414967294

दीपावली जैन संस्कृति का महान पर्व है। इस दिन जैन धर्म की दो महान आध्यात्मिक घटनाएं घटित हुईं। एक ओर भगवान महावीर को निर्वाण की प्राप्ति हुई, तो दूसरी ओर उनके प्रथम गणधर इंद्रभूति गौतम स्वामी को केवलज्ञान प्राप्त हुआ। इस प्रकार यह पर्व निर्वाण और केवलज्ञान, दोनों का प्रतीक बन गया। प्रसंग है कि पावापुरी के राजा हस्तिपाल के आग्रह पर भगवान महावीर चातुर्मास के लिए पावापुरी पधारे। वे सर्वज्ञ थे और जानते थे कि यह उनका अंतिम वर्षावास है। भव्य जीवों को निरंतर धर्मोपदेश देते हुए तीन माह और चौदह दिन व्यतीत हो गए। देवराज इंद्र ने वहां समवसरण की रचना की, जिसमें तिर्यंच, मनुष्य और देवगति के जीव उपस्थित हुए। भगवान का अतिशय ऐसा था कि उनकी देशना को सभी जीव अपनी-अपनी भाषा में समझ लेते थे। अंतिम समय में भगवान महावीर ने अपने जीवनकाल की साधना का सार धर्मदेशना के रूप में प्रस्तुत किया। उन्होंने लगातार 16 प्रहर तक धर्मसभा को संबोधित करते हुए सुकृत और दुष्कृत कर्मों के फल समझाए तथा सुख-विपाक और दुःख-विपाक के माध्यम से जीव के सुख-दुःख के कारणों और उनके निवारण का मार्ग बताया। यह देशना आज ''विपाक सूत्र'' के नाम से जानी जाती है। इसके पश्चात भगवान ने आचार धर्म की रूपरेखा पर प्रकाश डालते हुए जीवों को प्रतिबोध दिया। यह उपदेश ''उत्तराध्ययन सूत्र'' के नाम से विख्यात है। विनय, परीषह, चार उत्तम अंग, श्रवण-अनुशासन, तितिक्षा, निस्पृहता, ब्रह्मचर्य, संयम, श्रुताभ्यास, तपश्चरण और भावना जैसे विषयों के समावेश के कारण इसे जैन धर्म की गीता के रूप में भी जाना जाता है। जैन परंपरा में इसे भगवान महावीर की अंतिम वाणी के रूप में विशेष महत्व प्राप्त है। देशना देते हुए भगवान महावीर ने 37वें अध्ययन के समय शुक्लध्यान की चतुर्थ अवस्था प्राप्त की और उनका सांसारिक जीवन पूर्ण हुआ। इस दौरान उन्होंने गौतम गणधर को देव शर्मा ब्राह्मण को प्रतिबोध देने के लिए भेज दिया। इसका कारण गौतम स्वामी की भगवान महावीर के प्रति अत्यधिक आसक्ति और अनुराग बताया जाता है, जो उनके केवलज्ञान की प्राप्ति में बाधक था। जैसे ही भगवान महावीर को निर्वाण प्राप्त हुआ, गौतम स्वामी आसक्ति से मुक्त होकर अपने आत्मस्वरूप में स्थित हुए और उन्हें केवलज्ञान की प्राप्ति हो गई। इस प्रकार चारों ओर ज्ञान का दिव्य प्रकाश फैल गया। जैन मान्यता के अनुसार, भगवान महावीर के निर्वाण के समय देवों ने दिव्य दीप प्रज्वलित कर निर्वाण महोत्सव मनाया। मानव समुदाय ने भी जिनेंद्र भगवान की पूजा-अर्चना कर निर्वाण लाडू अर्पित किया और इस पावन अवसर को उत्सव के रूप में मनाया। भगवान महावीर के निर्वाण के बाद प्रथम गणधर गौतम स्वामी को केवलज्ञान प्राप्त हुआ। इस आनंद और उल्लास में ज्ञान के प्रतीक निर्मल प्रकाश से समस्त लोक को आलोकित करने के लिए दीपमालाएं प्रज्वलित की गईं। दीपमालाएं ज्ञान का प्रतीक हैं, जो अज्ञानरूपी अंधकार को दूर कर आत्मज्ञान का प्रकाश फैलाती हैं। इसी भाव को ''तमसो मा ज्योतिर्गमय'' अर्थात अंधकार से प्रकाश की ओर बढ़ने के संदेश से भी जोड़ा जाता है।

सजावट के हुनर को मिला सम्मान, दीपावली स्नेह मिलन में झलकी टेन्ट व्यवसायियों की एकजुटता

स्वागत द्वार प्रतियोगिता में अप्सरा टेन्ट हाउस ने मारी बाजी, विजेताओं को किया पुरस्कृत महापौर ने

उदयपुर. शाबाश इंडिया

उत्सवों को भव्यता, समारोहों को आकर्षण और खुशियों को यादगार स्वरूप देने वाले टेन्ट व्यवसायी जब स्वयं एक मंच पर जुटे तो माहौल आत्मीयता, उल्लास और संगठनात्मक एकजुटता के रंगों से सराबोर हो उठा। अवसर था उदयपुर जिला टेन्ट व्यवसायी समिति (रजि.) की ओर से ओपेरा गार्डन में आयोजित दीपावली स्नेह मिलन एवं स्वागत द्वार प्रतियोगिता-2025 के पुरस्कार वितरण समारोह का। इसमें जिलेभर के टेन्ट व्यवसायियों ने परिवार सहित भाग लेकर आपसी सौहार्द और व्यावसायिक एकता का संदेश दिया। समारोह का विशेष आकर्षण स्वागत द्वार प्रतियोगिता के विजेताओं का सम्मान रहा। आकर्षक सजावट, कलात्मक कल्पनाशीलता और सृजनात्मक कौशल के आधार पर उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले व्यवसायियों को स्मृति चिह्न एवं पुरस्कार प्रदान किए गए। प्रतियोगिता की प्रथम श्रेणी में अप्सरा टेन्ट हाउस ने प्रथम स्थान प्राप्त किया, जबकि राजकमल टेन्ट हाउस द्वितीय और डेकोर प्लानर तृतीय स्थान पर रहे। द्वितीय श्रेणी में विनायक टेन्ट हाउस ने पहला, राजलक्ष्मी टेन्ट हाउस ने दूसरा तथा शर्मा टेन्ट हाउस ने तीसरा स्थान हासिल किया। अन्य प्रतिभागियों को सांत्वना पुरस्कार देकर प्रोत्साहित किया गया।

शहर को संवारने में भी भागीदार बनें व्यवसायी : सिंघवी

मुख्य अतिथि महापौर पारस सिंघवी ने कहा कि विवाह समारोहों



से लेकर सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक आयोजनों तक टेन्ट व्यवसायियों की भूमिका महत्वपूर्ण है। उनकी मेहनत और कलात्मकता आयोजनों को विशिष्ट पहचान देती है। उन्होंने समिति से शहर का कोई एक मार्ग गोद लेकर उसकी स्वच्छता, रखरखाव और सौंदर्यीकरण की जिम्मेदारी निभाने का आह्वान किया। उदयपुर ग्रामीण विधायक फूलसिंह मीणा ने कहा कि संगठित व्यवसायी समाज अपनी समस्याओं का समाधान बेहतर ढंग से कर सकता है। भाजपा शहर जिलाध्यक्ष गजपाल सिंह राठौड़ ने टेन्ट व्यवसाय को स्थानीय अर्थव्यवस्था और रोजगार सृजन का महत्वपूर्ण आधार बताया। नगर निगम आयुक्त अभिषेक खन्ना ने सुव्यवस्थित आयोजनों में व्यवसायियों की भूमिका की सराहना की। सहकारिता प्रकोष्ठ राजस्थान के अध्यक्ष प्रमोद सामर ने सरकारी योजनाओं का लाभ उठाने के लिए प्रेरित किया।

संगठन की मजबूती और सामाजिक सरोकारों का लिया संकल्प

समिति अध्यक्ष सुधीर चावत ने स्वागत उद्बोधन में संगठन की गतिविधियों एवं उपलब्धियों की जानकारी दी। आयोजन में संरक्षक अनिल वैद, महामंत्री कमलेश पोखरना एवं सुनील हिंगड़, कोषाध्यक्ष महेंद्र जैन, भूपेंद्र जैन, असलम भाई, कमल शर्मा, महेश प्रजापत और रमेश माली का विशेष सहयोग रहा। कार्यक्रम का संचालन सुनीता वैद ने किया। अनीता चावत ने व्यवस्थाओं में सहयोग दिया। संयोजक अनिल वैद ने आभार व्यक्त किया। समारोह का समापन दीपावली की शुभकामनाओं, आत्मीय मेल-मिलाप और संगठन को अधिक सशक्त बनाने के संकल्प के साथ हुआ।

रिपोर्ट: राकेश शर्मा 'राजदीप'

योग निद्रा से तन को विश्राम, मन को शांति और जीवन को नई ऊर्जा

सुखाड़िया विश्वविद्यालय के निःशुल्क योग शिविर ने पूरे किए 263 सप्ताह; डॉ. पालीवाल ने कराया संगीतमय योग निद्रा का अभ्यास

उदयपुर. शाबाश इंडिया

आधुनिक जीवन की भागदौड़, मानसिक तनाव और व्यस्त दिनचर्या के बीच योग केवल शारीरिक स्वस्थता का माध्यम ही नहीं, बल्कि मन की शांति, आत्मचिंतन और सकारात्मक जीवनशैली का सशक्त आधार भी है। इसी संदेश को जन-जन तक पहुंचाने का प्रेरणादायी प्रयास मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के योग केंद्र द्वारा निरंतर किया जा रहा है। विश्वविद्यालय परिसर में संचालित निःशुल्क योग प्रशिक्षण शिविर के 263वें सप्ताह का समापन संगीतमय योग निद्रा के विशेष अभ्यास के साथ हुआ। विश्वविद्यालय के मुख्य परिसर स्थित विवेकानंद ऑडिटोरियम के प्रांगण में आयोजित शिविर के 1836वें दिन प्रख्यात योगाचार्य डॉ. सुरेश पालीवाल ने साधकों को सूर्य नमस्कार के साथ संगीतमय योग निद्रा का अभ्यास करवाया। इस दौरान साधकों ने शारीरिक शिथिलीकरण, मानसिक एकाग्रता और आंतरिक चेतना के जागरण की अनुभूति की।

अक्टूबर 2021 से अनवरत जारी है योग साधना का प्रेरक सफर

योग केंद्र के डॉ. हेमराज चौधरी ने बताया कि सामाजिक सरोकारों और जनस्वास्थ्य के प्रति प्रतिबद्धता के उद्देश्य से अक्टूबर 2021 में प्रारंभ हुआ यह निःशुल्क योग प्रशिक्षण शिविर बिना किसी अवकाश के निरंतर संचालित हो रहा है। नियमित योगाभ्यास के माध्यम से लोगों को स्वस्थ, संतुलित और अनुशासित जीवनशैली अपनाने के लिए प्रेरित किया जा रहा है। शिविर की यह निरंतरता योग के प्रति समर्पण और सामाजिक उत्तरदायित्व का उल्लेखनीय उदाहरण है।



योग निद्रा नींद नहीं, जागरूक चेतना के साथ गहन विश्राम की अनुभूति

योग विशेषज्ञ डॉ. दीपेंद्र जसकरण सिंह चौहान ने योग निद्रा का महत्व समझाते हुए बताया कि यह सामान्य नींद से बिल्कुल अलग एक विशिष्ट योगिक प्रक्रिया है। इसमें व्यक्ति जागरूकता बनाए रखते हुए शरीर और मस्तिष्क को गहन विश्राम की अवस्था में ले जाता है। उन्होंने बताया कि योग निद्रा का नियमित अभ्यास मानसिक तनाव कम करने, भावनात्मक संतुलन बनाए रखने, एकाग्रता बढ़ाने और आत्मजागरूकता विकसित करने में सहायक हो सकता है। शिविर के माध्यम से यह संदेश भी दिया गया कि नियमित योगाभ्यास केवल रोगों से बचाव का प्रयास नहीं, बल्कि स्वस्थ शरीर, शांत मन और सकारात्मक चिंतन के साथ जीवन को बेहतर बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

रिपोर्ट:
राकेश शर्मा 'राजदीप'

जैन सोशल ग्रुप नॉर्थ ने आश्रय केयर की बच्चियों के साथ मनाई अनूठी दीपावली



जयपुर.शाबाश इंडिया। दीपावली के पावन पर्व पर जैन सोशल ग्रुप नॉर्थ की ओर से निर्माण नगर स्थित ''आश्रय केयर'' की बच्चियों के साथ दीपावली का त्योहार उत्साह और उल्लास के साथ मनाया गया। आयोजन का मुख्य उद्देश्य जरूरतमंद बच्चियों के जीवन में खुशियां बांटना और उनके साथ पर्व की खुशियों को साझा करना था। इस अवसर पर बच्चियों के लिए विशेष भोज का आयोजन किया गया। साथ ही उन्हें नए वस्त्र, पढ़ाई के लिए आवश्यक पुस्तकें, दीपावली मनाने के लिए पटाखे और अन्य उपहार भेंट किए गए। कार्यक्रम के दौरान बच्चियों के साथ नृत्य, चुटकुले और हंसी-मजाक का दौर चला। इस खुशनुमा माहौल ने सभी का मन मोह लिया और पूरा परिसर उत्सवमय हो गया। इस आयोजन को सफल बनाने में सुनील-बबीता, अजय-स्नेहलता गंगवाल और अशोक-सविता का विशेष योगदान रहा। ग्रुप के सभी सदस्यों ने सेवा कार्य में उत्साहपूर्वक सहभागिता निभाई।



करुणा जहां निर्णय बनती है, वहीं से धर्म आचरण में उतरता है : युवाचार्य महेंद्र ऋषिजी

आज से चार दिवसीय तप, मौन और एकांत साधना में रहेंगे युवाचार्यश्री; गौतम प्रतिपदा पर विशेष मंगल पाठ से देंगे सान्निध्य

भीलवाड़ा.शाबाश इंडिया

अपने सुख के लिए किसी दूसरे जीव की पीड़ा स्वीकार करना धर्म की दृष्टि से उचित नहीं हो सकता। करुणा केवल एक भाव नहीं, बल्कि ऐसा विवेक है, जो सही समय पर निर्णय बदलने का साहस देता है। ये विचार शांतिभवन में श्रमणसंघीय युवाचार्य महेंद्र ऋषिजी ने श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्र के 23वें एवं 24वें अध्याय के मूल पाठ का स्वाध्याय और भावार्थ विवेचन करते हुए व्यक्त किए। अरिष्टनेमि के विवाह प्रसंग का उल्लेख करते हुए युवाचार्यश्री ने कहा कि विवाह की बारात के लिए बंधे जीवों को देखकर उनके मन में प्रश्न उठा कि यदि मेरे कारण हिंसा हो रही है, तो यह उत्सव मेरे लिए शुभ कैसे हो सकता है? इस करुणा भाव से प्रेरित होकर उन्होंने आभूषण उतारे, रथ मोड़ा और संयम का मार्ग चुन लिया। राजीमती के प्रसंग में उन्होंने कहा कि त्याग करना जितना महत्वपूर्ण है, त्याग की रक्षा करना उतना ही कठिन है। क्षणिक मोह से विचलित रथनेमि को राजीमती ने संयम का स्मरण कराया और त्यागे हुए भोगों की ओर लौटने को उगले हुए विष को फिर से ग्रहण करने के समान बताया। 23वें ''केशी-गौतमीय'' अध्ययन का भावार्थ प्रस्तुत करते हुए युवाचार्यश्री ने कहा कि वेश और व्रतों की भिन्नताओं से उत्पन्न प्रश्न संवाद के माध्यम से सुलझाए गए। मतभेद अपने आप में समस्या नहीं हैं, बल्कि संवाद का अभाव समस्या बनता है। यदि शंकाओं को सामने रखा जाए, प्रज्ञा से उन पर विचार किया जाए और परस्पर सम्मान बनाए रखा जाए, तो दूरियां कम हो सकती हैं। गौतम स्वामी के लिए प्रयुक्त ''विद्या और चरण में पारंगत'' विशेषण का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि ज्ञान और आचरण का संतुलन साधना की आवश्यक शर्त है। केवल जानना पर्याप्त नहीं है, बल्कि ज्ञान को जीवन में उतारना भी जरूरी है। 24वें ''प्रवचन माता'' अध्ययन में पांच समितियों और तीन गुप्तियों का विवेचन करते हुए युवाचार्यश्री ने बताया कि चलने, बोलने, वस्तुओं को लेने-रखने, आहार ग्रहण करने और दैनिक व्यवहार में सावधानी रखना तथा मन, वचन और काया को अशुभ प्रवृत्तियों से रोकना साधक की निरंतर जागरूकता का हिस्सा है। युवाचार्यश्री ने कहा कि अरिष्टनेमि ने करुणा को निर्णय बनाया, राजीमती ने संयम को दृढ़ता दी, केशी और गौतम ने संवाद से संशय मिटाए तथा प्रवचन माता ने व्यवहार को सजगता से जोड़ने की प्रेरणा दी। धर्म का वास्तविक प्रभाव तभी दिखाई देता है, जब वह केवल विचार बनकर न रह जाए, बल्कि निर्णयों को दिशा दे, संबंधों में संवाद बनाए रखे और आचरण को संयमित करे। इस अवसर पर अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने युवाचार्यश्री से तपस्या के प्रत्याख्यान ग्रहण किए। धर्मसभा में महाराष्ट्र, गुजरात, मध्यप्रदेश सहित प्रदेश के विभिन्न अंचलों से पहुंचे श्रद्धालुओं ने दर्शन कर मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया। श्रीसंघ शांतिभवन के मंत्री नवरतनमल भलावत ने बताया कि युवाचार्यश्री शुक्रवार से चार दिवसीय तप, मौन एवं एकांत साधना में रहेंगे। साधना पूर्ण होने के बाद गौतम प्रतिपदा नववर्ष के अवसर पर 10 नवंबर को प्रातः 7:30 बजे विशेष मंगल पाठ प्रदान करेंगे। उन्होंने बताया कि इस अवधि में प्रतिदिन प्रातः 8:30 बजे हितमितभाषी हितेंद्र ऋषिजी एवं साध्वीवृंद श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्र का स्वाध्याय कर उसके भावार्थ पर प्रवचन देंगे।



प्रवक्ता : सुनील चपलोत
शांतिभवन, भोपालगंज, भीलवाड़ा @ 9414730514



अर्हम ध्यान योग सत्र में साधकों ने सीखा आत्मचिंतन और मन की एकाग्रता का महत्व





जयपुर.शाबाश इंडिया

अर्हम ध्यान योग के प्रणेता श्री 108 प्रणम्य सागरजी महाराज के आशीर्वाद से श्री चंद्रप्रभु दिगंबर जैन मंदिर में अर्हम ध्यान योग सत्र का आयोजन किया गया। इसमें अर्हम ध्यान योग टीम के सदस्य अभिषेक जैन, विनय जैन, पुलकित जैन, डॉ. दीपाली जैन, सोनाली जैन, शालिनी बज एवं सीमा जैन ने सहभागिता करते हुए योगाभ्यास कराया। कार्यक्रम का आयोजन श्री दिगंबर जैन महिला महासमिति के त्रिशला संभाग, दुगार्पुरा की ओर से किया गया। संभाग अध्यक्ष रेणु पांड्या एवं छवि विनायक्या ने बताया कि कार्यक्रम का संचालन संस्थापक अध्यक्ष चंदा सेठी ने किया। इसमें दुगार्पुरा जैन समाज के अनेक लोगों ने भाग लेकर ध्यान एवं योग का लाभ लिया। इस अवसर पर दीपावली के आध्यात्मिक महत्व पर प्रकाश डालते हुए संदेश दिया गया कि पर्व पर बाहरी दीपों के साथ अपने भीतर भी ज्ञान और आत्मचेतना के दीप प्रज्वलित करने चाहिए। अर्हम ध्यान योग टीम के सदस्य अभिषेक जैन ने कहा कि यह केवल एक योग सत्र नहीं, बल्कि स्वयं से जुड़ने की पावन यात्रा है। तनाव और चिंता से दूर होकर समता एवं शांति का मार्ग अपनाना चाहिए। अपने बिखरे हुए विचारों को एकाग्र कर आत्मस्वरूप और स्वयं के सत्य से साक्षात्कार करने का प्रयास करना चाहिए। कार्यक्रम के अंत में ट्रस्ट अध्यक्ष प्रकाश चांदवाड़, मंत्री राजेंद्र काला एवं त्रिशला संभाग अध्यक्ष रेणु पांड्या ने सभी उपस्थित अतिथियों और प्रतिभागियों के प्रति आभार व्यक्त किया।

संकल्पपूर्वक स्थूल हिंसा का त्याग करना प्रत्येक श्रावक का कर्तव्य : जैनाचार्य उदारसागर

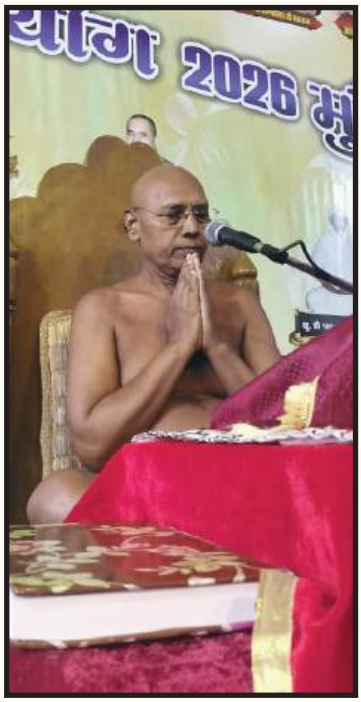
अहिंसा केवल स्वयं हिंसा नहीं करने तक सीमित नहीं, दूसरों से करवाना और उसका अनुमोदन करना भी हिंसा का दोष

मुरैना.शाबाश इंडिया

श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन पंचायती बड़ा मंदिर में धर्मसभा को संबोधित करते हुए परम पूज्य आचार्य 108 उदारसागर महाराज ने कहा कि गृहस्थ जीवन में रहते हुए भी व्यक्ति दृढ़ संकल्प के माध्यम से हिंसा का त्याग कर सकता है। अहिंसा केवल साधु-संतों के लिए ही नहीं, बल्कि प्रत्येक श्रावक के जीवन का महत्वपूर्ण धर्म है। व्यक्ति यदि अपने मन, वचन और व्यवहार को पवित्र बनाने का संकल्प ले ले, तो वह अनेक प्रकार की हिंसाओं से बच सकता है। अहिंसा की वास्तविक शुरूआत विचारों की शुद्धता और प्रत्येक जीव के प्रति दया एवं करुणा के भाव से होती है। आचार्यश्री ने जैन शास्त्र ''रत्नकरण्ड श्रावकाचार'' के 53वें श्लोक का उल्लेख करते हुए कहा...

सङ्कल्पात्कृतकारितमननाद्योगत्रयस्य चरसत्वान्।
न हिनस्ति यत्तदाहुः स्थूलवधाद्विरमणं निपुणाः॥53॥

इस श्लोक का अर्थ समझाते हुए उन्होंने कहा कि जो गृहस्थ मन, वचन और काय से स्वयं हिंसा करने, दूसरों से हिंसा कराने तथा हिंसा करने वालों का अनुमोदन करने का संकल्प त्यागकर दो इंद्रिय, तीन इंद्रिय, चार इंद्रिय और पांच इंद्रिय वाले त्रस जीवों का घात नहीं करता, उसे ज्ञानी पुरुष स्थूल हिंसा से विरत कहते हैं। अर्थात गृहस्थ जीवन में रहते हुए भी व्यक्ति अपनी इच्छा और संकल्प से होने वाली हिंसा का त्याग कर सकता है। आचार्यश्री ने कहा कि हिंसा केवल किसी जीव को स्वयं मारने से ही नहीं होती, बल्कि इसके तीन रूप हैं—कृत, कारित और अनुमोदना। कृत का अर्थ है स्वयं हिंसा करना, कारित का अर्थ है दूसरे से हिंसा करवाना और अनुमोदना का अर्थ है किसी अन्य व्यक्ति द्वारा की जा रही हिंसा का समर्थन करना अथवा उससे प्रसन्न होना। इसी प्रकार मन, वचन और काय—इन तीन योगों के माध्यम से भी व्यक्ति हिंसा के पाप का भागीदार बनता है। इसलिए अहिंसा का पालन केवल हाथों से किसी जीव को नहीं मारने तक सीमित नहीं है, बल्कि मन में हिंसा के विचार नहीं आने देने और वाणी से किसी को हिंसा के लिए प्रेरित नहीं करने की भी आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि गृहस्थ के लिए एक इंद्रिय जीवों की हिंसा से पूर्ण विरक्ति व्यावहारिक रूप से कठिन हो सकती है, क्योंकि दैनिक जीवन की अनेक गतिविधियों में सूक्ष्म जीवों की हिंसा हो जाती है। लेकिन इसका अर्थ यह बिल्कुल नहीं है कि व्यक्ति जानबूझकर जीवों की हिंसा करे। श्रावक कम से कम संकल्पपूर्वक त्रस जीवों की हिंसा का त्याग तो कर ही सकता है। चींटी, मक्खी, मच्छर, पशु-पक्षी सहित सभी चलायमान जीवों के प्रति दया और करुणा का भाव रखना चाहिए। आचार्यश्री ने उदाहरण देते हुए समझाया कि यदि कोई व्यक्ति स्वयं किसी जीव की हिंसा नहीं करता, लेकिन दूसरे को हिंसा करने के लिए कहता है, तो वह भी हिंसा के दोष से नहीं बच सकता। इसी प्रकार किसी जीव की हत्या किए जाने पर प्रसन्न होना अथवा उसका समर्थन करना भी हिंसक भावना है। सच्चा अहिंसा धर्म वही है, जिसमें व्यक्ति के मन में किसी जीव के प्रति द्वेष न हो, वाणी में कठोरता न हो और व्यवहार में किसी को कष्ट पहुंचाने का भाव न हो।



जरूरतमंद परिवारों को कपड़े, कंबल और स्वेटर भेंट किए

मुरैना.शाबाश इंडिया

धनतेरस एवं दीपावली के पावन पर्व पर लायंस क्लब मुरैना एलिट की ओर से अध्यक्ष अंजना शिवहरे के नेतृत्व में झुग्गी-बस्तियों में रहने वाले बच्चों के साथ खुशियों का त्योहार मनाया गया। इस अवसर पर क्लब के सदस्य बच्चों के बीच पहुंचे और उन्हें दीपावली की खुशियों में शामिल करते हुए विभिन्न उपहार एवं आवश्यक सामग्री वितरित की। कार्यक्रम के दौरान बच्चों को बिस्किट, नमकीन, समोसे, खील-बताशे, लड्डू, मिठाइयां एवं ताजे फल वितरित किए गए। वहीं, जरूरतमंद परिवारों को कपड़े, कंबल और स्वेटर भेंट किए गए, ताकि सर्दी के मौसम में उन्हें राहत मिल सके। बच्चों को रंग भरने वाली ड्राइंग कॉपियां और खिलौने भी दिए गए। दीपावली का उल्लास बढ़ाने के लिए उन्हें फुलझड़ियां, मोमबत्तियां और दीपक भेंट किए गए। उपहार पाकर बच्चों के चेहरों पर मुस्कान खिल उठी। उनकी खुशी ने पूरे वातावरण को आनंदमय बना दिया। क्लब के सदस्यों ने

लायंस क्लब मुरैना एलिट ने झुग्गी-बस्तियों के बच्चों के साथ मनाई दीपावली, बांटी खुशियां और उपहार

बच्चों के साथ समय बिताकर उन्हें प्रेम, स्नेह और अपनत्व का एहसास कराया। इस अवसर पर अध्यक्ष अंजना शिवहरे ने कहा कि दीपावली केवल अपने घरों को रोशन करने का त्योहार नहीं है, बल्कि उन चेहरों पर भी खुशियां लाने का अवसर है, जिनकी जिंदगी में खुशियों की रोशनी कम है। हमारा प्रयास है कि त्योहार की खुशियां समाज के हर वर्ग तक पहुंचें और कोई भी बच्चा स्वयं को अकेला या वंचित महसूस न करे। लायंस क्लब मुरैना एलिट की इस पहल ने सेवा, सहयोग और सामाजिक सरोकारों की सराहनीय मिसाल प्रस्तुत की। वास्तव में त्योहारों की असली रौनक केवल सजावट और रोशनी में नहीं, बल्कि किसी जरूरतमंद के चेहरे पर मुस्कान लाने में है। कार्यक्रम में सचिव लॉयन अनुराधा गर्ग, कोषाध्यक्ष लॉयन अंशुल गोलश, लॉयन अंजना गर्ग, लॉयन डॉ. शिवानी तोमर, लॉयन शिखा गोयल एवं लॉयन आनेही राठी सहित क्लब के अन्य सदस्य उपस्थित रहे। इस दीपावली लायंस क्लब मुरैना एलिट ने जरूरतमंद बच्चों को



केवल उपहार ही नहीं बांटे, बल्कि उनके जीवन में खुशियों और अपनत्व के दीप भी जलाए।

भीलवाड़ा में साकार होगी पावापुरी की भव्य रचना, निर्वाण कल्याणक पर चढ़ाए जाएंगे 24 किलो के लाडू

आचार्य पुलकसागर महाराज के सान्निध्य में तीन दिवसीय मंत्र जाप अनुष्ठान आज से



भीलवाड़ा.शाबाश इंडिया

राष्ट्रसंत मनोज्ञाचार्य पुलकसागरजी महाराज ससंघ के ऐतिहासिक चातुर्मास के निष्ठापन (समापन) से पूर्व भीलवाड़ा श्रद्धा और भक्ति का एक और नया इतिहास रचने जा रहा है। भगवान महावीर स्वामी के निर्वाण कल्याणक महोत्सव के अवसर पर 9 नवंबर को आचार्यश्री के सान्निध्य में पहली बार भीलवाड़ा में भव्य पावापुरी की रचना की जा रही है। मध्यप्रदेश के प्रसिद्ध झांकी रचनाकार नंदनभाई एवं उनकी टीम पिछले कई दिनों से इसके निर्माण में जुटी हुई है। पावापुरी की इस भव्य रचना के दर्शन निर्वाण कल्याणक दिवस पर शास्त्रीनगर स्थित सूर्यमहल में सुबह 8 से 10 बजे तक आयोजित कार्यक्रम के दौरान किए जा सकेंगे। इस अवसर पर 24 किलो का मुख्य निर्वाण लाडू चढ़ाया जाएगा। इसके साथ ही 24 पुण्यार्जक परिवारों की ओर से 5-5 किलो के 24 निर्वाण लाडू भी अर्पित किए जाएंगे। श्री पुलकसागर चातुर्मास समिति के अध्यक्ष प्रवीण चौधरी ने बताया कि निर्वाण कल्याणक महोत्सव के तहत सुबह 8 बजे से भगवान महावीर स्वामी का पूजन किया जाएगा। इसके बाद निर्वाण कांड पाठ के साथ निर्वाण लाडू अर्पित किए जाएंगे। उन्होंने बताया कि आचार्यश्री के सान्निध्य में शुक्रवार, धनतेरस से रविवार, अमावस्या तक तीन दिवसीय मंत्र जाप अनुष्ठान आयोजित होगा। इसमें चातुर्मास के मंगल कलशों के पुण्यार्जक परिवार मध्यरात्रि में मंत्र अनुष्ठान करेंगे। इस दौरान सभी श्रावक लाल रंग की धोती-दुपट्टा धारण कर मंगल कलशों के समक्ष बैठकर मंत्र जाप की आराधना करेंगे। अनुष्ठान के पश्चात आचार्य पुलकसागर महाराज के आशीर्वाद के साथ मंगल कलश उन्हें सौंपे जाएंगे। पुण्यार्जक परिवार इन कलशों को अपने घरों में स्थापित कर सकेंगे। आयोजन की तैयारियां पूरी कर ली गई हैं। मनोज्ञाचार्य पुलकसागरजी महाराज ससंघ के पावन सान्निध्य में भीलवाड़ा चातुर्मास का निष्ठापन 15 नवंबर को पिच्छिका परिवर्तन समारोह के साथ होगा। इसके बाद आचार्यश्री भीलवाड़ा के ऐतिहासिक चातुर्मास का समापन कर जहाजपुर की ओर मंगल विहार करेंगे। उनका जहाजपुर होते हुए श्रीमहावीरजी और आगरा की दिशा में विहार करने का भाव है।

दीपावली पर रोशनी से जगमगाएगा चौमूं, सर्वश्रेष्ठ सजावट करने वालों को सम्मानित करेगा विराज फाउंडेशन

11 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल बाजारों, शोरूमों एवं व्यापारिक परिसरों का करेगा अवलोकन



चौमूं.शाबाश इंडिया। दीपावली के पावन पर्व पर शहर की सुंदरता और आकर्षण बढ़ाने के उद्देश्य से विराज फाउंडेशन ने अनूठी पहल की है। फाउंडेशन के प्रदेश कार्यालय में प्रदेशाध्यक्ष भुवनेश तिवाड़ी की अध्यक्षता में आयोजित बैठक में दीपावली के अवसर पर शहर के विभिन्न व्यापार मंडलों एवं व्यापारिक प्रतिष्ठानों की ओर से की जाने वाली आकर्षक सजावट को लेकर विस्तार से चर्चा की गई। बैठक में सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि उत्कृष्ट सजावट करने वाले व्यापार मंडलों एवं प्रतिष्ठानों को फाउंडेशन की ओर से सम्मानित किया जाएगा। विराज फाउंडेशन के प्रदेश संरक्षक, पूर्व पत्रकार, लेखक एवं सिक्किम प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी, गंगटोक (सिक्किम) के कुलसचिव प्रो. रमेश कुमार रावत ने इस पहल की सराहना की। उन्होंने गंगटोक से फोन पर प्रदेशाध्यक्ष भुवनेश तिवाड़ी को शुभकामनाएं देते हुए उनके इस सकारात्मक निर्णय के लिए साधुवाद दिया। साथ ही उनके सामाजिक कार्यों की प्रशंसा करते हुए भविष्य में भी इस प्रकार की जनहितकारी पहल जारी रखने का आह्वान किया। फाउंडेशन के प्रदेश महासचिव बनवारी लाल शर्मा ने बताया कि इस पहल के तहत 11 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल गठित किया जाएगा। यह प्रतिनिधिमंडल दीपावली के अवसर पर शहर के विभिन्न बाजारों, शोरूमों एवं व्यापारिक परिसरों का भ्रमण कर सजावट का अवलोकन करेगा। सजावट के मूल्यांकन के लिए तीन अलग-अलग श्रेणियां निर्धारित की गई हैं। पहली श्रेणी में व्यापार मंडलों की ओर से की गई सामूहिक बाजार सजावट, दूसरी श्रेणी में शोरूम की आकर्षक सजावट तथा तीसरी श्रेणी में व्यापारिक प्रतिष्ठानों एवं परिसरों की सुंदर सजावट को शामिल किया गया है। इन तीनों श्रेणियों में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वालों को विराज फाउंडेशन की ओर से सम्मानित किया जाएगा। प्रदेश उपाध्यक्ष डॉ. सी.एम. सैनी ने कहा कि इस पहल का उद्देश्य व्यापारियों के उत्साह, मेहनत और रचनात्मकता को प्रोत्साहित करना तथा शहर में सकारात्मक प्रतिस्पर्धा की भावना विकसित करना है। दीपावली के अवसर पर पूरा चौमूं शहर आकर्षक रोशनी और सजावट से जगमगाए तथा शहर की सुंदरता को नई पहचान मिले, इसी उद्देश्य से फाउंडेशन ने यह निर्णय लिया है।

मन के अनुरूप कार्य नहीं होने पर श्रद्धा डगमगानी नहीं चाहिए : मुनि पुंगव श्री सुधासागरजी महाराज

चातुर्मास कलशों के निष्ठापन के साथ मनाया जाएगा भगवान महावीर का निर्वाण महोत्सव : विजय धुर्रा

समयसार शिक्षण शिविर में हो रही अध्यात्म की वर्षा

इंदौर.शाबाश इंडिया

दलाल बाग मैदान में आयोजित विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए राष्ट्रसंत, राजकीय अतिथि मुनि पुंगव श्री सुधासागरजी महाराज ने कहा कि मन के अनुरूप कार्य नहीं होने पर अपनी श्रद्धा और विश्वास को डगमगाने नहीं देना चाहिए। आज आपने शांति धारा कराई और मनोकामना पूरी नहीं हुई, तो भी अपने विश्वास को कमजोर मत करना। आपका काम नहीं हुआ, तो कोई बात नहीं। यदि आप केवल अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए भगवान के पीछे घूम रहे हैं, तो ऐसा तो पशु भी करते हैं। मां के पीछे-पीछे घूमते हुए पशु भी अपना जीवन बिता देता है। जन्मदिन पर आपको चॉकलेट भले ही न मिले, लेकिन पिता के चरणों का आशीर्वाद मिल जाए तो समझना कि आपका दिन सफल हो गया। गुरुजनों का आशीर्वाद मिलना ही अपने आप में बड़ी उपलब्धि है।

9 नवंबर को होगा चातुर्मास कलश निष्ठापन समारोह एवं कलशों का वितरण

समारोह का संचालन करते हुए मध्यप्रदेश महासभा के संयोजक विजय धुर्रा ने बताया कि परम पूज्य निर्यापक श्रमण, राष्ट्रसंत एवं राजकीय अतिथि मुनि पुंगव श्री सुधासागरजी महाराज के इंदौर आगमन पर भक्तों द्वारा चातुर्मास कलशों की स्थापना की गई थी। अब गुरुदेव के सान्निध्य में भक्तिभाव के साथ इन कलशों का निष्ठापन किया जाएगा। उन्होंने बताया कि 9 नवंबर को भगवान महावीर स्वामी के निर्वाण महोत्सव के अवसर पर विशेष महापूजन का आयोजन होगा। समारोह का शुभारंभ प्रातः 6:30 बजे मंगलाष्टक के साथ होगा। परम पूज्य गुरुदेव के



श्रीमुख से विश्व कल्याण की मंगल भावना व्यक्त की जाएगी। इसके बाद भगवान महावीर स्वामी के निर्वाण कल्याणक महोत्सव के अंतर्गत महाआराधना की जाएगी और निर्वाण लाडू समर्पित किया जाएगा। इसके पश्चात गुरुदेव के श्रीमुख से चातुर्मास कलशों का निष्ठापन किया जाएगा। फिर राष्ट्रसंत मुनि पुंगव श्री सुधासागरजी महाराज के मंगल आशीर्वचन होंगे। कार्यक्रम के अंत में कलशों का वितरण किया जाएगा। श्रद्धालु इन कलशों को गाजे-बाजे के साथ अपने घर ले जाकर दीपावली पूजन में स्थापित कर सकेंगे।

भगवान से कुछ मांगने नहीं, उनका आशीर्वाद पाने आएं

मुनिश्री ने कहा कि पहले वे भी भगवान के बड़े भक्त थे और उनसे अनेक कामनाएं करते थे। लेकिन भक्ति का वास्तविक अर्थ भगवान से कुछ मांगना नहीं, बल्कि उनके दर्शन और सान्निध्य में ही मंगल का अनुभव करना है। उन्होंने कहा कि भगवान का नाम मंगल है, उनका ध्यान मंगल है और उनके दर्शन भी मंगलकारी हैं। जब भक्त भगवान के चरणों में पहुंच जाता है, तो उसके लिए सब कुछ मंगलमय हो जाता है। उन्होंने कहा कि मनुष्य को यह भी पता नहीं होता कि वह भगवान से क्या मांग रहा है और भगवान उसे क्या दे सकते हैं। यदि व्यक्ति अपनी छोटी-छोटी इच्छाओं में उलझने के बजाय भगवान पर



विश्वास रखे, तो उसे आत्मकल्याण का बड़ा मार्ग मिल सकता है। उन्होंने उदाहरण देते हुए कहा कि व्यक्ति सोने के बिस्कुट मांग सकता है, लेकिन भगवान की कृपा से ऐसी सिद्धि भी प्राप्त हो सकती है कि मिट्टी को छूने मात्र से वह सोने जैसी मूल्यवान बन जाए।

रास्ते खोजने में समय न गंवाएं, सही रास्ते पर चलें

मुनिश्री ने कहा कि हम जीवनभर रास्ते खोजने में समय गंवाते रहते हैं, लेकिन सही रास्ते पर चलने का प्रयास नहीं करते। हमें मंजिल का पता नहीं होता और हम अनेक रास्तों पर भटकते रहते हैं। यह किसी भगोड़े की कहानी नहीं, बल्कि हम सभी के जीवन की वास्तविकता है। जंगलों में भी अनेक रास्ते होते हैं, जिन्हें जानवर बना देते हैं, लेकिन वे सभी मंजिल तक नहीं पहुंचाते। ऐसे रास्तों पर चलने वाला व्यक्ति बीच में ही भटक जाता है। उन्होंने कहा कि रास्ता बताने वाले संकेत और साइन बोर्ड में बहुत अंतर होता है। साइन बोर्ड आगे जाने की दिशा बताता है, लेकिन मंजिल तक पहुंचने के लिए उस सही मार्ग पर चलना भी जरूरी है।

कथा कराने वाले हनुमानजी महाराज, न कोई आयोजन समिति और न कोई प्रायोजक : काठियाबाबा

वृंदावन के आचार्य महेंद्र कृष्ण शास्त्री 11 नवंबर से हनुमान टेकरी पर सुनाएंगे श्रीमद्भागवत कथा

भीलवाड़ा.शाबाश इंडिया

धर्मनगरी भीलवाड़ा में 11 से 17 नवंबर तक छोटी हरणी स्थित श्री टेकरी के बालाजी काठियाबाबा आश्रम में महंत बनवारीशरण काठियाबाबा के सान्निध्य में श्रीमद्भागवत कथा सप्ताह ज्ञान यज्ञ महोत्सव आयोजित होगा। आयोजन की तैयारियां अंतिम चरण में हैं। कथा के दौरान प्रतिदिन दोपहर 1 से शाम 5 बजे तक वृंदावन के प्रख्यात कथावाचक एवं गौरक्षक आचार्य महेंद्र कृष्ण शास्त्री व्यासपीठ से श्रद्धालुओं को कथा श्रवण कराएंगे। कथा आयोजन के सूत्रधार महंत बनवारीशरण काठियाबाबा ने गुरुवार को आश्रम परिसर में आयोजित पत्रकार वार्ता में बताया कि यह कथा हनुमानजी महाराज की प्रेरणा से उन्हीं के लिए आयोजित हो रही है। वे तो केवल निमित्त मात्र हैं। इस आयोजन के लिए न तो किसी आयोजन समिति का विधिवत गठन किया गया है और न ही कोई संगठन या संस्था प्रायोजक के रूप में जुड़ी है। समस्त भीलवाड़ावासियों एवं छोटी हरणी ग्रामवासियों के सहयोग से यह आयोजन किया जा रहा है। यह कथा सर्वसमाज के लिए है और सभी के सहयोग से ही इसे सफल बनाया जाएगा। उन्होंने बताया कि कथा का अधिकाधिक धर्मप्रेमियों को लाभ मिले, इसके लिए विभिन्न धार्मिक एवं सामाजिक संगठनों को भी आयोजन में सहभागी बनने के लिए आमंत्रित किया जा रहा है। महंत काठियाबाबा ने बताया कि श्रीमद्भागवत कथा के शुभारंभ से पूर्व 11 नवंबर को सुबह 9:15 बजे दादीधाम से हनुमान टेकरी तक भव्य कलश शोभायात्रा निकाली जाएगी। इसमें सैकड़ों महिलाएं सिर पर मंगल कलश धारण कर शामिल होंगी। कथा के लिए मंदिर परिसर में विशाल डोमयुक्त पांडाल का निर्माण किया जा रहा है। इसमें हजारों श्रद्धालुओं के बैठने की व्यवस्था रहेगी। कथा से संबंधित सभी आवश्यक सुविधाएं भी उपलब्ध कराई जाएंगी। कथा स्थल के बाहर और मुख्य मार्ग पर स्वागत द्वार बनाए जा रहे हैं तथा विशेष सजावट की



जा रही है। आयोजन को सफल बनाने के लिए विभिन्न कार्यकर्ताओं को अलग-अलग जिम्मेदारियां सौंपी गई हैं। कलश यात्रा की जिम्मेदारी रेखाकंवर झाला, प्रेमलता शर्मा एवं मंजू पोखरना को दी गई है। शोभायात्रा प्रभारी के रूप में मनोज सोनी, निखिल अग्रवाल, गोवर्धनलाल वैष्णव एवं प्रिंस सिसोदिया जिम्मेदारी संभालेंगे। पांडाल व्यवस्था का दायित्व अंकित सोमानी एवं हर्ष राठी को सौंपा गया है। निलेश कांठेड़ मीडिया प्रभारी रहेंगे, जबकि भोजन व्यवस्था की जिम्मेदारी छोटी हरणी के समस्त ग्रामवासी संभालेंगे।